॥ श्रीः ॥

अथ

छन्दार्णवपिंगल.

श्रीमत्सकल कवि कुल सरसिज वनप्रकाशन
दिवाकर श्रीरामचन्द्र भक्ति प्रकाशितान्तः-
करण प्रतापगढ देशीय ट्योंगा ग्रामवासि
भिषारीदास कृत.

जिसमें

मात्रावृत्त वर्णवृत्त मेरु मर्कटी पताका और प्रति
छन्द लघु गुरु गण स्थापन रीति और
अति रमणीय छन्दोंके उदाहरण हिन्दी
भाषा कवित्व रसिकोंके उपकारार्थ
अति सुगमतासे वर्णित हैं.

उसको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने
अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें
छापकर प्रसिद्ध किया.

शके १८२०, संवत् १९५५.

कल्याण—मुंबई.

श्रीगणेशाय नमः ।



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ
छन्दार्णवपिंगल।

त्रिभंगीछन्द।

करिवदन विमंडित ओज अखंडित पूरण पण्डित ज्ञान परं। गिरिनन्दिनिनन्दन असुर निकन्दन सुरउरचन्दन कीर्तिकरं॥ भूषणमृगलक्षण वीरविचक्षण जनप्रणरक्षण पास धरं। जय जय गणनायक खलगणघायक दाससहायक विघनहरं॥ १॥

दण्डकछन्द।

एक रद हैं न शुभ्र शाखा बढि आई लम्बोदरमें विवेक तरु जो है सुभ्र वेशको। शुण्डादण्ड कै तब हथ्यारु है उदण्ड यह राखत न लेश अघ विघन अशेषको॥ मद कहौ भूलि न झरत सुधासार यह ध्यानहीं तेहिको दृढ हरण कलेशको। दास गृह विजन विचारो तिहूं तापनिको दूरि करनेको वारो करण गणेशको॥ २॥

छप्पै।

श्रीविनतासुत देखि परम पटुता जिन्ह कीन्हेउ।

छन्दभेद प्रस्तार वरणि बातनि मन लीन्हेउ ॥ नष्टोदि-ष्टनि आदि रीति बहु विधि जिन भाख्यो । जैवो चलत जनाय प्रथम वाचापन राख्यो ॥ जो छन्द भुजंगप्रयात कहि जात भयो जहँ थल अभय । तिहि पिंगलनाग नरे-शकी सदा जयति जैजैति जय ॥ ३ ॥

दोहा ।

जिन प्रगट्यो जगमें विविध छन्द नाम अभिराम ।
ताहि विष्णुरथको करौं विविकर जोरि प्रणाम ॥ ४ ॥

कवित्त ।

अभिलाषा करी सदा ऐसनिका होय ब्रित्थ सब ठौर दिन सब याही सेवा चरण चानि । लोभालई नीचे ज्ञान हलाहलहीको अंशु अंत है क्रिया पताल निदा रसहीको खानि ॥ सेनापति देवीकर शोभा गनतीको भूप पन्ना मोती हीरा हेम सौदा हाँसहीको जानि । हीय-पर देव परव दै यश रटै नाउं खगासन नगधर सी-तानाथको लापानि ॥ ५ ॥

दोहा ।

या कवित्त अंतरबरण लै तुकंत है छंडि ।
दासनाम कुलग्राम कहि नाम भगतिरस मंडि ॥ ६ ॥
प्राकृत भाषा संस्कृत लखि बहु छन्दोग्रंथ ।
दास कियो छन्दोरणव भाषा रचि शुभ पंथ ॥ ७ ॥

विजया ।

दास गुरू लघुणोढ द्दढ द्दगनाथनि भेदनि उच्चरि जानै । जानै गनागनको फल मत्त बरंन पथारनिको करि जानै ॥ नष्ट उदिष्ट रु मेरु पताक बिमर्कटि सूचिनको भरि जानै । वृत्ति औ जाति समुक्तक दण्डक छन्द महोदधि सो तरि जानै ॥ ८ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मंगलाचरणवर्णनं नाम प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

अथ गुरुलघुविचार।

दंडक ।

ई ऊ आ ये आदि स्वर वरण मिलहू एहू बिन्दु युक्त औ सँयुक्त पर गुरु बंक खाँचि । अ इ उ क कि कु ऐसे लघु सूधे विधि कीन्हो कहति अक्षरनि जोर सनाबुतहि नांचि ॥ रहल ये संयुक्त वरनन्ह परे न मानि नित्यै गुरु लघु लघु गुरुको गुरू वैं बांचि । एक मत्त लहु भनि गुरुको दुमत्त गनि याहीमें उदाहरण हेरि ले हृदयमें यांचि ॥ १ ॥

प्राकृते यथा ।

अरेरे वाहहि कान्ह नाव छोटि डगमग कुगतिन देहि । तैं इथनै संतारि दे जो चाहहि सो लेहि ॥२॥

दोहा ।

कहु कहुं सुकवि तुकंतमें लघुको गुरु गनि लेत ।
गुरुहूको लघु गनत हैं समुझत सुमति सचेत ॥ ३ ॥

गुरुको लघु यथा संस्कृते श्लोक ।

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं कूर्मो बिभर्त्ति धरणीं खलु पृष्ठकेन । अंभोनिधिर्वहति दुःसहवाडवाग्निमंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयंति ॥ ४ ॥ छन्द वसंत तिलक है याके तुकमें गुरु चाहिये लघु है गुरु गनिवो॥

लघुको गुरु यथा देवको कवित्त ।

पीछे पंखा चँवर वारी ज्योंकी त्यों सुगंधवारी ठाढी बायें घायें घन फूल निके हार गहे । दाहिने अतर और [illegible] मौरे लीन्हे सामुहे लपेटे लाज भोजनके थार हे॥ नितके नियमहि तूहितके बिसारे देव चितके बिसारे बिसराये सब बारि पहे । सपाघन बीच ऐसी चम्पा बन बीच फूली डारिसी कुआरि कुंभिलाति फूली डार गहे ॥ ५॥

तिलक ।

छन्दरूप घनाक्षरी है याके तुकंतमें लघु चाहिये गुरु है सो लघुही गनिवो ।

लघुनाम दोहा ।

शंख मेरु काहल कुसुम करतल दण्ड अशेष ।
शब्द गंध बरसरपरस नाम ललहु की रेख ॥ ६ ॥

गुरुनाम ।

किंकिनि नूपुर हार फनिकन कचौंर ताटंक ।
कोडरो कुण्डल वलय गो मानस गुरु बंक ॥ ७॥

दुकलनाम ।

नगन दुकल है भेद सो प्रथम नाम गुरु जानि ।
निज प्रिय सप्रिय परम प्रिय पिय बिय लघुहि बखानि ८॥

॥।ऽ० आदिलघुत्रिकलनाम ।

तोमर तुंमर पत्त सर धुन चिरु चिन्ह चिराल ।
पवन बलट पट आदि लघु त्रिकल नूतकी माल॥९॥

॥ऽ।० आदिगुरुत्रिकलनाम ।

तूर समुद निर्वान कर तालो सुरपतिनन्द ।
नाम आदि गुरु त्रिकलको पटहताल अत चंद॥१०॥

त्रिकलनाम ।

नारी रसकुल भामिनी तंडव भास प्रमान ।
नाम त्रिलघुको जानि पुनि त्रिकलहि टगन बखान ११॥

ऽऽ० दुइगुरुनाम ।

सुनति रसिक रस नाग पुनि कहि मन हरण समान ।
कुंती पूतासुर बलय करन दोइ गुरु जान ॥ १२॥

ऽ० अन्तगुरु चौकलनाम ।

कमलातन कर बाहु भुज भुज अभरण अभिराम ।
गज अभरण प्रहरण असनि चकल अंत गुरुनाम ॥१३॥
।ऽ। भूपति गजपति अश्वपति नायक पौन मुरारि ।
चक्रवती सुपयोधरो मध्य गुरू कल चारि ॥ १४ ॥
। ऽ । गडदहन बलभद्रपद नूपुर जंघा पाइ ।
तात पितामह आदि गुरु चौकल नाम सुभाइ ॥ १५ ॥

।।। ।।। विप्र पंचसर परम पद शिखर चारि लघु जाति।
डगन चकल कहिं चौकलहीं गज रथ तुरँग पदाति १६॥

।।।० पञ्चकलनाम ।

।ऽऽ० सुरनरिंद उडपति अहित दंती दंत तलंप ।
मेघ गगन गज आदि लघु पंचकलहि कहि झंप ॥ १७॥
ऽ।ऽ पक्षि बिडाल मृगेन्द्र अहि अमृत जोध लकलक्ष।
वीन गरुड कहि मध्यलघु पंचकलहि परतक्ष॥ १८॥

पञ्चकलक्रमते नाम ।

इन्द्रासन बीरो धनुष हीरो शेखर फूल।
अहि पाइक गनि क्रमहिंते नाम पंचकल तूल ॥ १९॥
ठगन पकल पंचकलहि कहि ठगन षट्कलहि लेखि।
ताहि छकलके क्रमहिंते भेदते रहो देखि ॥ २० ॥

षट्कलके नाम प्रतिभेदक्रमते ।

हर शशि सूरज शक्र अरु शेषो अहि कमलाषि।
ब्रह्म किंकिणी वंधु ध्रुव धर्म्मशालि चरभाषि॥ २१ ॥

अथ वर्णगण।

म न य भ गण शुभ चारि हैं र स ज त अगुनो चारि।
मनुज कवितके प्रथम तुक कीजै इन्हैं विचारि ॥ २२॥
म तिगुरु न तिलघु भादि गुरु यादि लघू शुभ दानि ।
महि अहि शशि जल क्रमहिंते इष्टदेवता जानि॥ २३ ॥
ज गुरु मध्य रो मध्यलघु स गुरु अंत त ल अंत ।
इते अशुभ गण रवि अगिनि पवन ख देव कहंत॥२४ ॥

द्विगुणविचार ।

मन हित यभ जन जतहि उद रस रिपु उर अब रेखि ।
कवित आदि कुगणहिं परे द्विगुण विचारहि देखि॥२५॥
जनहित अति नीकेत कछु रिपु उदास मिलि मन्द ।
रिपु उदासही जो परै तौ सब भांति कुवन्द ॥ २६ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे गुरुलघुगणागणवर्णनं नाम द्वितीयस्तरंगः ॥२॥

अथ मात्राप्रस्तारवर्णनम् ।

सप्तकलप्रस्तार सवैया ।

द्वै द्वै कलानिको बंध बनै पहिले उबरे लघु आदि करो जू । भेद बढ़ैबेको शीशके आदि गुरूके तरे लघु एक धरोजू ॥ और यथाप्रति पंक्ति खचै बचे पीछे गुरु लघु लेखि भरोजू । याही विधानते सर्व लघू लगि पूरण मत्तपथारथ रोजू ॥ १ ॥

प्राकृते यथा ।

पटमगुरु हेट्ठट्ठाणे लहु आप रिठवेहु । अपबुद्धि ये सरिसा सारिसापंती उघरिया गुरु लघु देहु ॥ २ ॥

दोहा ।

भयो जानि प्रस्तारको क्रमसो दीजै अंक ।
संख्या नष्ट उदिष्टकी कीजै उदर निशंक ॥ ३ ॥
इतने कलके भेद हैं कितनों पूंछै कोइ ।
पूर्व युगुल सरि अंक दै जानै संख्या होइ ॥ ४ ॥

पूर्वयुगुलअंक दंडक।

जैकलको भेद कोऊ पूछे तेती कला कीजै ताके पर अंक दीजै क्रमहींते एक दोइ। एक दोय जोरि तीनि लिखि लीजै तीजे पर तीनि दोइ जोरि आगे खैंचि लिखि जिय जोइ॥ दस पांच पीछे तीनि जोरि आगे आठ लिखि याही विधि लिखे जैये कहाँलों बतावै कोइ। जितनी कलाके पर जेतो अंक परै यह जानि लीजै तेते पर प्रस्तारको अन्त होइ॥ ५॥

सप्तकलरूपे यथा।

१ २ ३ ५ ८ १३ २१
। । । । । । ।

अथ नष्टलक्षणं दोहा।

इति अंकपर होत है भेद कहो केहि रूप।
उत्तर हेत यहि प्रश्नके नष्ट रच्यो अहिभूप॥ ६॥

अथ मात्रानष्टकी अनुक्रमणी दंडक।

जै कलमें भेद पूंछे तेतनी ये कला कीजै तापै लिखि पूरव युगुल अंक लीजिये। पूछ्यो अंक अन्तमें घटाइ बाकी हाथ राखि तामें लिखे अंकनि घटै वे रस भीजिये॥ जौन यामें घटै करो ताके तर आगिली कला लै गुरु दास बचै योंही फेरि कीजिये। रीते परयो बीते नष्ट कर्म बाकी लघुही है पूंछ्यो जिन तिनको देखाइ रूप दीजिये॥ ७॥

अस्य तिलकम्।

काहू पूंछ्यो सप्तकलमें दशयों रूप कैसो ताके

प्रश्नको अंक दशसौ इक्कीससे घटचो बाकी रहे ग्यारह तामें तेरह नहीं घटे तौ आठ घटचो सो तेरहकी तरकी कला लेके गुरु भयो बाकी रहे तीनि तामें तीनिहीं घटचो सो पांचके तरकी कलाको लैके गुरु भयो और रस दुहूं ओर लघुही रह्यो ॥

ऽऽ।० अथ मात्राउदिष्टलक्षणं कुंडलिया ।

।ऽऽऽ	१
।।।ऽऽ	३
ऽऽ।ऽ	४
।।ऽ।ऽ	५
।ऽ।।ऽ	६
ऽ।।।ऽ	७
।।।।।ऽ	८
ऽऽऽ।	९
।।ऽऽ।	१०
।ऽ।ऽ।	११
ऽ।।ऽ।	१२
।।।।ऽ।	१३
।ऽऽ।।	१४
ऽ।ऽ।।	१५
।।।ऽ।।	१६
ऽऽ।।।	१७
।।ऽ।।।	१८
।ऽ।।।।	१९
ऽ।।।।।	२०
।।।।।।।	२१

कहिये केते अंकपर दासरूप यहि साज । करि उदिष्ट ताको उतर देन कह्यो अहिराज॥देन कह्यो अहिराजपूर्वजु अलंक कलनि पर । लघुके शीशहि शीश गुरुके ऊपरहू तर ॥ पुनि गुरु शिरको अंक जोरिकै ठीकहि गहिये । अंत अंक सुघटाइ बचै बाकी सो कहिये ॥ ८ ॥

१ २ ३ ८ २१
। । ऽ ऽ ।
५ १३

अस्य तिलकम् ।

सप्त कलमें यह रूप लिखि पूंछचो जो कौन सो है । ताके पर अंक दियो है गुरुके शिर तीनि औ आठ परचो सो ग्यारह इक्कीसमें घटचो बाकी दशयो भेद है ।

अथ मात्रामेरुलक्षणम् ।

कितेएक गुरुयुक्त हैं किते हैं तिगुरु युक्त। ताको उत्तर मेरुकरि देहुअहीपति उक्त९

अनुक्रमणी चौपाई ।

द्वै कोठा दोहरो लिखि लीजै । तातर दोहरो तीन ठबीजै॥तातर दोहरो चारि बनायो । औ जित चाहो तितो बढ़ायो ॥ कोठनि आदि विषम जो पैये । एकै एक आँक लिखि जैये॥ सम कोठनिकी आदि जो परो । द्वौ तिचारि यहि क्रमते भरो॥पंक्ति अन्त इक इक लिखि आवो । तब रीतन भरिवो चित लावो ॥ शिर अंके तसु शिरपर अंके । जोरि भरहू क्रमते निरशंके ॥ पहिलो कोठ दुकलकी जानै । द्वितिय त्रिकलकी बात बखानै ॥ यहि बिधि करे भेद सब जाहिर । चहहु तो जाहु अंक दै बाहिर ॥

षष्ठमात्रामेरु ।

१	१		
२	१		
१	३	१	
३	४	१	
१	५	६	१
४	१०	६	१

छठयें चारि कोष्ट जो परै । सप्त कलहि उलटै उद्धरै ॥ सब लघु एक एक गुरु छहै । दश दुग चारि त्रि गुरुयुत रहै ॥ सब लघु अंत अंक अहि उक्त । चलि गति बाम कहो गुरुयुक्त ॥ इहि बिधि करी जितेको चहो । सकल जोरि संख्याहू गहो ॥ १३ ॥

पताका दोहा ।

कह्यो जिते गुरुयुक्त तुमते हैं किहि किहि ठौर ।
उतर हेत इह प्रश्नके रचे पताका डौर ॥ १४ ॥

पताकाकी अनुक्रमणी ।

जै कलकी पताक जिय लायो । खण्डमेरु ताको

अलगायो ॥ ताही संख्या कोठा करिये । नाम पताका पाँती खरिये ॥ १५ ॥

अरिल्ल ।

पुरुव जुअल सरि अंक भिन्न लिखि देखिये । अन्त अङ्क इत अन्त कोठ तेहि रेखिये ॥ तामहिं क्रमते इक इक अङ्क घटाइये । वा ढिग अधते दुतिय प्रति लिखि जाइये ॥ तृतिय पंक्तिमें द्वै द्वै जोरि कमी करो । चौथे पंक्तिमें तीनि तीनि चितमें धरो ॥ इन भांतिन प्रति पंक्ति एक बढ़ि अंकजू । घटै पताका रूप लिखो निरशंकजू ॥ १६ ॥

दोहा ।

गणना होइ नही न क्रम आयो अङ्क न आउ ।
कारि पताक प्रस्तारमें सब गुरुयुक्त देखाउ ॥ १७ ॥

।।।ऽऽ	३
।।ऽ।ऽ	५
।ऽ।।ऽ	६
ऽ।।।ऽ	७
।।ऽऽ।	१०
।ऽ।ऽ।	११
ऽ।।ऽ।	१२
।ऽऽ।।	१४
ऽ।ऽ।।	१५
ऽऽ।।।	१७

४	१०	६	१

०	१	३	८	२१	०
	२	५	१३	१	
	४	६	१६	२	
	९	७	१८	३	
		१०	१९	५	
		११	२०	८	
		१२		१३	
		१४		२१	
		१५			
		१७			

द्वै कि तीनि गुरुयुतनि जो लिखो चहौ इक ठौर ।
सिखि पताक प्रस्तार विधि जाना औरो और ॥ १८ ॥

कुण्डलिया ।

सब लघु सब गुरु लिखि ठयो प्रथम भेद इहि भांति ।
पहिले गुरुतर लघु करहि पुनि करि सरिसै पांति ॥
पुनि करि सरिसै पांति उलटि लघुतर गुरु लिखिकै ।
तजि आयो गुरु आदि दास इहि रीतिहि सिखिकै ॥
इक इक गुरु इहि भांति आदि दिशि ल्यावहि तब लहु ।
जबलगि सब गुरु आदि परै आगे करि सब लहु ॥ १९ ॥

सप्त कलमें द्वै गुरु युक्तको प्रस्तार जाकी संख्या पताकाके दृश कोठेमें है ।

दोहा—

पताकाहिको देखिकै यामें दीजे अंक ।
उद्दिष्टो प्रस्तारमें कीजै सही निशंक ॥ २० ॥

इति पताका प्रस्तार ।

अथ मर्कटीलक्षणं गीतिका ।

यह पंक्ति कोठनि खैंचिकै प्रतिपंक्तिको चितु दीजिये ।
तहँ वृत्तिभेद रु मात्रबर्णसो लघु गुरु लिखि लीजिये ॥ तिन आदि कोठनि एक एकनि ठानि गुरुढिग सून है । पुनि वृत्ति कोठ दुआदि गनती भरी घटियन ऊन है ॥ २१ ॥
लखि भेद पंक्ति विचारि भरिये पूर्व जुअलै अंकही ।
करि वृत्ति भेदहि गुनन पुरवहु मात्र पंक्ति निशंकही ॥

लघु पंक्ति एकजु अंकसो गुरुपंक्तिमें लिखि लेहु जू ।
तेहि मात्र पंक्ति घटाइ बाकी बरणमें धरि देहु जू ॥
सोइ वर्ण पंक्तिहुमें घटै लघुपंक्तिमें लिखि आनिये ।

वृत्ति	१	२	३	४	५	६
भेद	१	२	३	५	८	१३
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८
लघु	१	२	५	१०	२०	३८
गुरु	०	१	२	५	१०	२०

तेहि आनिकै गुरुपंक्तिमें घटना वहै फिरि ठानिये ॥ प्रस्तार प्रति जो भेद मात्रा लघु गुरूकी टीक है । तेहि वृत्ति कोठनि संग मर्कटजाल कहत अलीक है ॥ २२ ॥

मर्कटीजान दोहा ।

किते भेद लघु अंत है किते भेद गुरु अन्त ।
इहि पूछे प्रस्तारमें सूची बरणें सन्त ॥ २३ ॥
जिते अंकपर अन्त है तापाछे लघु अन्त ।
तापाछेको अन्त लहि गुरु अन्तहि कहितन्त ॥२४॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राप्रस्तारे नष्टउद्दिष्टे मेरुमर्कटी-पताकासूचीवर्णनं नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

दोहा ।

जितने मात्राभेदमें प्रस्तारहि परकार ।
तितनो बर्णहुमें कियो अहिनायक विस्तार ॥ १ ॥

अथ वर्णप्रस्तारकी अनुक्रमणी विजया ।

आदिको भेद सबै गुरुके पुनि भेद बढैबेकि रीति रचै । आदि गुरूके तरे लिखिकै लघु आगे यथाप्रति पंक्ति खचै ॥ पाछे गुरूहिसो पूरण वर्णक सर्व लघू लगि योंहीं मचै । ऐसे पथा रुकै दोइसो दूनोई दूनोकै वर्णकी संख्या सचै ॥ २ ॥

अथ वर्णसंख्या यथा– $\overset{२}{S}\ \overset{४}{S}\ \overset{८}{S}\ \overset{१६}{S}\ \overset{३२}{S}$ इति पंचवर्णसंख्या ।

अथ नष्टलक्षणं दोहा ।

पूछे अंकहिं अर्ध करि सम आये लघु जानि ।
बिषमें इक दै अर्ध करि गुरु लिखि पूरण ठानि ॥ ३ ॥

पन्द्रहों भेद पूछ्यो सो पन्द्रह आधो नहीं है सक्ता एक मिलाई सोरहका आधो किया एक गुरु लिख्यो बाकी रहे आठ ताको आधो चारि पूरे पर्‌यो । लघु लिख्यो दोइको आधो एक पूरे पर्‌यो लघु लिख्यो एकमें एक मिलाइ आधो कियो गुरु लिख्यो ॥ SIII SII सब मिलाइ ॥

अथ वर्णउद्दिष्टलक्षणं दोहा ।

लिखि पूछे पर एकवे दून दून लिखि लेहि ।
लघु शिर अंकनि जोरिकै एक मिलैकहि देहि ४॥ $\overset{२}{S}\ \overset{४}{I}\ \overset{८}{I}\ \overset{१६}{S}$

अथ वर्णमेरुलक्षणं कुण्डलिया ।

शिरपर कोठो दोइ तल तीनि तासु तल चारि ।
अक्षरमेरु बढाइयों जत प्रस्तार निहारि ॥ जत प्रस्तार

निहारि पांतिकी आदिहु अन्तहु । एक एक लिखि जाहु कह्यो पन्नग भगवन्तहु॥ गनि दै है गुरुयुक्त सकल जियकरहु नखरको । सूने कोठनि भरहु जोरि द्वै द्वै शिर परको ॥ ५ ॥

अथ वर्णपताकालक्षण दोहा ।

कोष्ठ पताकाको करहि खण्ड मेरुकी साखि ।
ताके शिर घर एकते दूनो दूनो राखि ॥ ६ ॥

दण्डक ।

१	१	१					
१	२	१	२				
१	३	३	१	३			
१	४	६	४	१	४		
१	५	१०	१०	५	१	५	
१	६	१५	२०	१५	६	१	६

दूनो अंक राखि खरी पांतिन लिखन लागे एक द्वै लै तीनि तीनि द्वै लै पांच रेखिये । याही क्रम उपजित अंकनिसों आगे आगे जोरि जोरि खरी पांति लिखिन विशेषिये ॥ एक पांति भरि दूजी पांति वहै रीति करि आयो अंक छोंडि ताके आगे ढूंढि लेखिये । क्रम टूटे एकै भलो चलताहि आगे ढूंढि दास ऐसे वरणपताका पूरे पेखिये ॥ ७ ॥

दोहा ।

वरणमत्तको एकही है पताकप्रस्तार ।
वाही रूपनि पर घरो याको नाम उदार ॥ ८ ॥

अथ वर्णमर्कटीलक्षण दण्डक ।

षट्पांति लिखि पहली ये गनती ये भरो दूजी पाँति द्वैते दूनो दूनो अंक धरि देहु। दुहुनसों गुनि गुनि चौथी

पंचवर्णपताका ।

१	५	१०	१०	५	१
१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	१६		
		२१	२७		
		२५	२९		

IIISS ८
IISIS १२
ISIIS १४
SIIIS १५
IISSI २०
ISISI २२
SIISI २३
ISSII २६
SISII २७
SSIII २९

पचकलमें द्वैगुरुयुक्त को प्रस्तार ।

पांति भरि ताको आधो आधो पांची छठी पाँतिनको भरि देहु॥ चौथी पांची पांतिनके अंकनको जोरि जोरि तीजी पांति रीती होय पूरण वहै कारि देहु । वृत्ति भेद मात्रा वरण लघु गुरु पूछै दास ताके आगे वरणमरकटी ये धरि देहु ॥ ९ ॥

वृत्ति	१	२	३	४	५	६
भेद	१	२	३	५	८	१३
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८
लघु	१	२	५	१०	२०	३८
गुरु	०	१	२	५	१०	२०

दोहा ।

जिते भेदपर अन्त है ता आधो गुरुअन्त ।
तितनोई लघु अन्त है अक्षर सूचीसन्त ॥१०॥
नष्ट उदिष्ट पताक है मत्ताहूकी भांति ।
समुझि लीजिये सुमति साजि अक्षरसंख्यापांति॥ ११ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे नष्टउद्दिष्टमेरुमर्कटीपताका-
सूचीवर्णनं नाम चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

दोहा ।

चारि चरण चहुंके वरण मत्त होहिं यक रूप ।
वृत्त छन्द तेहि लगि रच्यो प्रस्तारनि अहिभूप ॥ १ ॥
यदपि वर्णप्रस्तारमें सकल वृत्तिको बोध ।
तदपि मत्तप्रस्तारहू सकल मिलै अविरोध ॥ २॥

छप्पै ।

मत्त छन्दकी रीति दास बहु भांति प्रकाशै ।
आदि अन्त कल दुकल बढ़ै दूजो नहिं भासै ॥
चारयो तुक सम कलनि परहि यह नेम निवाहिय ।
कहुं गुरु थल है लघू दियहु नहिं भ्रमगति चाहिय ॥
बिन गने होत पूरण कला जति गति कवि वाणी ह वस ।
यह जानि नागनायक कह्यो जिव्हा जानै छन्दरस ॥३॥

दोहा ।

दुकल तिकल चोकल यकल छकल निरखि प्रस्तार।
क्रमते वरणत दास तहँ वृत्ति छन्दविस्तार ॥ ४ ॥

मत्तछन्दमें वृत्तिहू दरशावत इहि हेत ।
बहु छन्दनकी गति मिले एक सुकवि गनि लेत॥५॥
नेम गह्यो यह दास करि हरि हर गुरुहि प्रणाम ।
उदाहरणके अन्तमें परै छन्दको नाम ॥ ६ ॥
द्वै कलके द्वै भेदमें जानो श्रीमधुछन्द ।
महीसार अरु कमल ये तीनि त्रिकलके वन्द ॥ ७॥

श्रीछन्द।

जैं, है। श्री, की ॥

मधुछन्द ।

तिय, जिय। बंधु, मधु ॥ ८॥

महीछन्द ।

रमा, समा। नहीं, महीं ॥

सारछन्द ।

ऐनि, नैनि। चारु, सारु ॥

कमलछन्द ।

चरण, वरण । अमल, कमल॥ ९ ॥

अथ चारि मात्राके छन्द दोहा ।

चारि मत्त प्रस्तारमें पांच वृत्ति निरधारि ।
कामा रमनि नरिन्द अरु मन्दर हरिहि विचारि १०

कामाछन्द ।

रामै, नामै। यामै, कामै ॥ ११॥

रमनीछन्द ।

धरणी, बरणी। रमणी, रमनो ॥ १२ ॥

नरिन्दछन्द ।

सह्मारु, सवारु। परिन्द, नरिन्द ॥ १३ ॥

मन्दरछन्द ।

ध्यावत, ल्यावत । चन्दर, मन्दर॥ १४ ॥

हरिछन्द ।

जगमहि, सुख नहिं । भ्रम तजि, हरि भजि ॥ १५ ॥

पंचमात्राप्रस्तारके छन्द सोरठा ।

पंच मत्तप्रस्तार आठ भेदयुत हरिप्रिया ।
तरणिजा रु पंचार वीर बुद्धि निशि यमक शशि ॥ १६॥

शशिछन्द ।

महीमें, सहीमें । यशीसे, शशीसे ॥ १७॥

प्रियाछन्द ।

है खरी, पत्थरी । तोहिं या, री प्रिया ॥ १८॥

तरणिजा छन्द ।

उर धरो, पुरुषसो । बरणिजा, तरणिजा ॥ १९ ॥

पंचालछंद ।

नाचत, गावत । दै ताल, पंचाल ॥ २० ॥

वीरछन्द ।

हरु पीर, अरु भीर । वर धीर, रघुवीर॥ २१ ॥

बुद्धिछन्द ।

भ्रमै तजि, हरै भजि । करै शुद्धि, धरै बुद्धि ॥ २२ ॥

निशिछन्द ।

सुख्य लहि, दुख्य दहि । भानि रिसि, याहि निशि ॥२३॥

यमकछन्द ।

श्रुति कहहि, हरिजनहि । छुवत नहिं, यम कबहिं ॥२४॥

छः मात्राके छन्द दोहा ।

ताली रमा नगन्निका जानि कला करताहि ।
मुद्राधारी वाक्य अरु कृष्णनाथको चाहि ॥ २५ ॥
हर अरु विष्णु मदन गनो अधिको होत न मित्त ।
षट कल तेरह भेदके प्रगट तेरहो वृत्त ॥ २६ ॥

तालीछन्द ।

नाचै है, शंभूपै । वेताली, दै ताली ॥ २७ ॥

रमाछन्द ।

जगमाहीं, सुख नाहीं । तजि कामै, भजि रामै ॥ २८ ॥

नगन्निकाछन्द ।

प्रसिद्ध हों, अघन्निका । न सिद्ध हों, नगन्निका ॥२९॥

कलाछन्द ।

धीर गहो, आजु लहो । नंदलला, कामकला ॥ ३० ॥

करताछन्द ।

महि धरता, जग भरता । दुख हरता, सुख करता ॥३१॥

मुद्राछन्द ।

भजै राम, सरै काम । न छापाहि, न मुद्राहि ॥ ३२ ॥

धारीछन्द ।

दानवारि, चित्त धारि । पाप झारि, कोश धारि॥ ३३ ॥

वाक्यछन्द ।

जगतनाथ, गहत हाथ । शरण तार्क्य, कहत वाक्य॥३४॥

कृष्णछन्द।

छांडै हठ, एरे शठ। तृष्णै तजि, कृष्णै भजि॥ ३५॥

नायकछन्द।

सुखकारन, दुखटारन। सब लायक, रघुनायक॥ ३६॥

हरछन्द।

जगतजननि, दुखी जननि। कृपा करहि, व्यथा हरहि ३७

विष्णुछन्द।

दास जगत, झूठ लगत। याहि तजहि, विष्णु भजहि ३८

मदनकछन्द।

तरुणिचरण, अरुणवरण। हृदयहरण, मदनकरण॥ ३९॥

सात मात्राप्रस्तारके छन्द दोहा।

सात मत्तप्रस्तारको शुभगति जानो छन्द।
वृति यकीस प्रस्तार है चारि भांति गति बन्द॥ ४०॥

शुभगतिछन्द।

कृपासिन्धो, दीनबन्धो। सर्व सुरपति, देहि शुभ गति४१

पुनः प्रभाविशाल।

लाल गोपाल,......। यशुमतिनन्द, आनँदकन्द॥ ४२॥

पुनः।

खलै घायक, सर्व लायक। कंसमारण, जनउधारण॥४३

पुनः।

दुखको हरो, सुख विस्तरो। बाधाकदन, करुणासदन४४

आठ मात्राके छन्द दोहा।

आठ मत्तप्रस्तारके तिनादिक उनमानि।
सहित हंस मधुभार गति चौंतिस वृत्ति बखानि॥ ४५॥

लक्षणप्रतिदल ।

कर्नौ कर्नौ, तिनौं बर्नौं । भागनु करना, हंस बरन्ना ॥ नवहि प्रशंसा, कहि चौबंसा । द्विजवर भासन, कहत सवासन ॥ नगन नगवती, कहिय मधुमती ॥ ४६ ॥

तीर्नाछन्द ।

धर्मज्ञाता, निर्भय दाता । तृष्णाहिन्नो, जीवै तिन्नो ॥ ४७ ॥

हंसछन्द ।

पोखर जोऊ, दीह कितोऊ । जात न केहू, हंस लटेहू ४८

चौबंसाछन्द ।

उपजे पुत्ता, सुलगन जुत्ता । जग अवतंसा, चरचउ बंसा ॥ ४९ ॥

सवासनछन्द ।

सुनहु बलाहक, हुजियत नाहक । वरषि हुताशन, अपयश वासन ॥ ५० ॥

मधुमतीछन्द ।

तप निकसत हो, धरि कब शिर हो ।
विमल वनलती, सुरभि मधुमती ॥ ५१ ॥

लक्षण दोहा ।

विप्र जगन करहंत है वाही गति मधुभार ।
छवि त्रिपंच जति जानिये आठ मत्तप्रस्तार ॥ ५२ ॥

करहंतछन्द ।

यशुमतिकिशोर, शशि जिमि चकोर ।
मम मुख लखन्त, यकटक रहन्त ॥

मधुभारछन्द ।

दक्षिणसमीर । अतिकृश शरीर ॥
हु अमंद भाइ । मधुभार पाइ ॥ ५३ ॥

छविछन्द ।

मिलिहि किमि भोर । तकत शशिवोर ॥
थकित सो विशेषि । वदनछबि देखि ॥ ५४ ॥

अथ नौमात्राके छन्द दोहा ।

नौ मत्ताकी अमित गति पचपन वित्त विचारि ।
कर्ण पगन हारी गनो तस वसुमती निहारि ॥ ५५ ॥

हारीछन्द ।

तो मानु भारी । ठाने पियारी ॥
सो तै सुखारी । होती महारी ॥ ५६ ॥

वसुमतीछन्द ।

सो शुभ्र शशिसो । जो दान असिसो ॥
साजै वसुमती । सारी वसुमती ॥ ५७ ॥

अथ दशमात्राके छन्द दोहा ।

दश मत्ताके छन्दमें वृत्त नवासी होय ।
संमोहादिक गतिन सँग वरणत हैं सब कोय ॥ ५८ ॥

सोरठा ।

संमोहा गुरु पांच कहि कुमारललिता नसग ।
तय गन मध्या बांच तुंगा दुज सँग भास गहु ॥ ५९ ॥

संमोहाछन्द ।

ह्वो चाहो सन्ता । जो मेरो कन्ता ॥
तो भंजो कोहा । लोभा संमोहा ॥ ६० ॥

कुमारललिताछन्द ।

जु राधाहि मिलावै । वहै मोहिं ज्यावै ॥
कहत भरि उसासों । कुमारललितासों ॥ ६१ ॥

मध्याछन्द ।

तौलौं विधि जामै । लज्जा अरु कामै ॥
बांटो यह सोई । मध्या कुच दोई ॥ ६२ ॥

तुंगछन्द ।

अम्बर छबि छाजै । मुक्त अवलि राजै ॥
मेरु शिखर नीकें । तुंग उरज तीके ॥ ६३ ॥

तुंगाछन्द ।

तुव मुख शशि ऐसो । निरखत जेहि शेसो ॥
छकि रहु ह्वै गुंगा । सुनहि उरज तुंगा ॥ ६४ ॥

दोहा ।

द्विजवर जग कमलहि रचो द्वै दुजगो कमलाहि ।
त्यों रतिपद सँग ना तहै दीपकलाते चाहि ॥ ६५ ॥

कमल यथा ।

पिय चष चकोर है । तिय नयन भोर है ॥
विधुवदन बालको । कमलमुख लालको ॥ ६६ ॥

कमलाछन्द ।

कब अँखियन लखि हों । अरु भुजभरि रखिहों ॥
शशधर विमल कला । हृदयकमल कमला ॥ ६७ ॥

रतिपद यथा ।

युवति वह वराति तो । उरते यह टराति जो ॥
हरनि हिय दरदकी । सुरति पद पदुमकी ॥ ६८ ॥

दीपकछन्द ।

जय जयति जगबन्द । मुनिकौमुदीचन्द ॥
त्रैलोक्य अवनीप । दशरत्थ कुलदीप ॥ ६९ ॥

ग्यारह कलाके छन्द दोहा ।

ग्यारह कलमें एक सै चौवालिस गनि वृत्त ।
तहँ अहीर लीला अपर हंसमाल गनि मित्त ॥ ७० ॥

सोरठा ।

जात अहिर कहंत रात प्रगटि लीला भनो ।
स गयो ग्यारह मंत छंद हंसमाला गनो ॥ ७१ ॥

अहिरछन्द ।

कौतुक सुनहु नबीर । न्हान धसी तिय नीर ॥
चीर धरयो लखि तीर । लै भजि गयो अहीर ॥ ७२ ॥

लीलाछन्द ।

धन्य यशोदा कही । नन्द बड़े भागही ॥
ईश्वर ह्वै जा घरै । अद्भुत लीला करै ॥ ७३ ॥

हंसमालाछन्द ।

इहि अरण्यमाहीं । सर मानुष्य नाहीं ॥
विकसे कंज आला । कुरै हंसमाला ॥ ७४ ॥

बारह मात्राके छन्द दोहा ।

बारह मत्ता छन्दगति वरन्यो अमित फणीश ।
होत किये प्रस्तार है वृत्त दुसै तैंतीस ॥ ७५ ॥

लक्षणप्रतिदल ।

तीनो कर्नौ शेषा । भोसो गो मद्लेषा ॥
चित्रपदा भभकर्नौं । ननमहि युक्ता बर्नौं ॥ ७६ ॥
रोनसोहि हरमुख ज्यों । अमृतगति दुज भसत्यों ॥
नयसहि सारंगिय हो । दश लहु गुरु दमनक हो॥ ७७॥

शेषछन्द ।

ताको जीमैं ध्याऊं। ताहीको हौं गाऊं ॥
पीरो जाके केशा । कंठे जाके शेषा ॥ ७८ ॥

मद्लेखाछन्द ।

मिथ्या वादन कोहा । निर्लज्जा अरु मोहा ॥
जेतो ऐगुण देखो । तेतोमैं मद लेखो ॥ ७९ ॥

चित्रपदाछन्द ।

राम कह्यो निज धोखे । स्वर्ग लह्यो तिन चोखे ॥
भक्तन कोन बिचारो । चित्रपदा रथ चारो ॥ ८० ॥

युक्ताछन्द ।

दृगयुग मनको मोहै । तिनसँग पुतरी सोहै ॥
लखि यह उपमा युक्ता । कमल भ्रमरसंयुक्ता ॥८१॥

हरमुखछन्द ।

धन्य जन्म निज कहती । प्राण वारतहि रहती ॥
देखि ग्वारि लहि सुखको। मैन गर्व हरमुखको॥८२॥

अमृतगतिछन्द ।

फिरि फिरि लावत छतिया । लखत रहै दिन रतिया ॥
तुमजु लिखी वहि पतिया।अमृतगती मृदु बतिया॥८३॥

सारंगियछन्द ।

धनि धनि ताही तियको । वश करती जो पियको ॥
सुर निरमावै हियको । कर गहि सारंगियको ॥८४॥

दमनकछन्द ।

विषधर धर परम प्रिया । जगतजननि सदै हिया ॥
जय जय जनदुरदुहरी।प्रबल दनुजदमनकरी॥८५॥

दोहा ।

गोसभ गोनर क्रीड़ है बिंबनसों यों पूर ।
सजसी तोमर जानियो त्यों तमोल है सूर ॥ ८६ ॥

मानवक्रीड़ा यथा ।

धन्य यशोदाहि कही । नन्द बड़ो भाग सही ॥
ईश्वर है जाहि घरै । मानवको क्रीड़ करै ॥ ८७ ॥

बिम्बछन्द ।

अमियमें आशा तेरो । हरत वह चेतु मेरो ॥
मनहिं यह क्यों न मोहै ।अधर तुव बिम्बसो है॥८८॥

तोमरछन्द ।

असतीनको शिषमानि । तिय क्यों तजै कुलकानि॥
द्विज यामिनी अपवाद । कहूं छोड़तो मर्य्याद॥८९॥

सूरछन्द ।

बीधै न बालानयन । श्री पाइजे मोहै न ॥
रागी नहीं है मूर । ते तो बडे हैं सूर ॥ ९०॥

दोहा ।

लीला रबि कल जातयुत सज करनो दिग ईश ।
तरल नयन रवि लघु कला प्रस्तारचो फणिईश ॥ ९१ ॥

लीलाछन्द ।

अवधपुरी भाग भारु । दशरथगृह छबि अगारु ॥
राजत जहँ वे स्वरूप । लीला तनु धरि अनूप ॥ १२ ॥

दिगीशछन्द ।

वरमें गोपाल मागौं । पदपदुम प्रेम पागौं ॥
हर ध्याइ जो अनंदै । दिगईश जाहि वन्दै ॥ १३ ॥

तरलनयनछन्द ।

कमलवदनि कनकवदनि । दुरदगमनि हृदयहरनि ॥
बड़ेहि सुकृति मधुरबयनि ।मिलति तरुणि तरल नयनि॥

तेरहकलके छन्द दोहा ।

नराचिकादिक तेरहैं कलकी गति गनि लेहु ।
वृत्ति बूझिकै तीनिसै सतहत्तर कहि देहु ॥ १५ ॥
कर्ना जोर नराचिका जो गोय मन महर्ष ।
रगन रगन अरु नन्दते है लक्ष्मी उत्कर्ष॥ १६ ॥

नराचिका छन्द ।

भौंहैं करी कमान हैं । नैना प्रचण्ड बान हैं ॥
रेखा शिरे जो तैं दई । नराचिका यहौ भई ॥ १७ ॥

महर्षछन्द ।

तमोर गुनी जत भाई । जवाहिरकी गति पाई ॥
जितोपर भूमिहि जाई । तितो इम हर्ष बिकाई ॥ १८ ॥

लक्ष्मीछन्द ।

वेद पावै न जा अंत । जाहि ध्यावैं सबै संत ॥
ज्याइवो जक्त जा तंत । पाहि सो लक्ष्मीकंत ॥ १९ ॥

चौदह मात्राके छन्द ।

चौदह मत्ता छन्दगति शिष्यादिक अब रेखि ।
भेद छसै दश होत हैं प्रस्तारो करि देखि ॥ १०० ॥

लक्षणप्रतिपद ।

सातोगो शिष्या कीजै । बिय दुज मगन सुवृती है ॥
पाइता मो भहिसगनो । है मनिबँधो भौमसको ॥ १०१ ॥
तीनि भग्गनग सारवती । सुमुखि दुजो भभ हारवती ॥
नरजगे मनोरमा कही । दुज सजग समुद्रिका वही १०२

शिष्याछन्द ।

मीचौ बांधी जाकेही । नाहीं बाच्यो ताको जी ॥
ऐरे भाई मेटै को । लिख्या सिख्या बंध्ये जो ॥ १०३ ॥

सुवृतीछन्द ।

आसित कुटिल अलकैं तेरी । उचित हरतु है मति मेरी ॥
यह कत सुमु हनै जीको। बरजहि उरज सुवृत्तीको १०४

पाइताछन्द ।

नैना लागे विधुवदनी । वैरी जुट्टे प्रबल अनी ॥
माँगो पासो अरिय अडे । पाइत्ता है करम बडे ॥१०५॥

मनिबंधोछन्द ।

आपुहि राख्यो जो न चहै । कर्म लिख्यो तौ पाइ रहै ॥
कर्महिं लागै हाथ सोऊ।जो मनि बाँध्यो गांठि कोऊ१०६

सारवतीछन्द ।

आवती बाल शृंगारवती । पीन पयोधर भारवती ॥
कुंजर मोतिय हारवती । पुंज प्रभा दधि सारवती १०७

सुमुखीछन्द ।

यह न घटा चहुं ओर बनी। दश दिश दौरति हार अनी॥
तजि यहि औसर रूप सखी । चलि हरिपै रजनी सुमुखी

मनोरमाछन्द ।

जबहिं बाल पालकी चढी । तबहिं अद्भुतै प्रभा बढी ॥
लखी दास पूर्णोपमा । कमलमैं बसी मनोरमा ॥ १०९ ॥

समुद्रिकाछन्द ।

हरी मनु हरिगो कह्यो यही ।
नहिं नहिं नजू नहीं नहीं ॥
सुनि सुनि बतिया मनो पिका ।
लखि लखि अंगुरी समुद्रिका ॥ ११० ॥

लक्षण दोहा ।

चारि दशै कल हाकली लमलम शुद्ध गतंत ।
सगन भुजा द्वै संयुता दुरवि सरूपी मंत ॥ १११ ॥

हाकलिकाछन्द ।

परतिय गुरतिय तू लगनै । परधन गरलसमान भनै ॥
हिय नित रघुवर नाम ररै । तासु कहा कलिकाल करै ॥

शुद्धगाछन्द ।

अरी कान्हा कहां जैहै । सुतेरो दास ह्वै रैहै ॥
सितारा लै बजावै बू । केदारा शुद्ध गावै तू ॥ ११३ ॥

संयुताछन्द ।

नहिं लालकी मृदु हांस है । मनमत्थकी यह पास है ॥
भ्रुव नैन संग न लेखिये। धनु तीर संयुत पेखिये॥ ११४ ॥

स्वरूपीछन्द ।

श्रीमनमोहनकी मूरति । है तुव सनेहकी सूरति ॥
मैं निज मन यह अनुरूपी।तू मोहन प्रेमस्वरूपी॥११५॥

पंद्रहमात्राके छन्द दोहा ।

पन्द्रह मत्ता छन्द गति आदि चौपई जानि ।
नौसै सत्तासी कहत वृत्तिभेद उनमानि ॥ ११६ ॥

लक्षण ।

पन्द्रह कला गनो चौपई ।
हंसी तिन्ना दुज धुन ठई ॥
तर हरिखान उपरलो कला ।
सकल कहत अहिपति उज्जला ॥ ११७॥

चौपाई ।

तुव प्रसाद देख्यो भरि नैन । कही सुनी मनभावति बैन॥
कब परि है मोहन गल बांह । चौपई ठइतनी मन मांह ॥

हंसीछन्द ।

आई वक्षो परि चिकनई । छूटै लागी तन लरिकई ॥
लागी हासी मन मृदु हरे । बाला हंसी गति पगु धरै ११९

उज्जलछन्द ।

धवल जरत परबत्त हो तबै । अरु पयनिधि को बरणौ सबै॥तबहिं विमलही शशिकी कला । जब न हुत्यो तो जस उज्जला॥ १२० ॥

दोहा ।

तीनि तगन यक है ध्वजा हरनी छन्द सुभाउ ।
तीनि रगन अहिपति कहे महालक्ष्मी ठाउ ॥ १२१॥

हरिनीछन्द ।

बसै उर अंतरमें नितहीं । मिलै कहूँ भरि अंक नही ॥
लखौं सब ठौर न बैन कहै।यहै हरिनीरसु रीति गहै १२२

महालक्ष्मीछन्द ।

शास्त्रज्ञाता बडो सोभनो । बुद्धिवंतो बडो सो गनो ॥
सोइ शूरो सोइ सन्त है । जो महालक्ष्मीवंत है ॥ १२३ ॥

सोरहमात्राके छन्द दोहा ।

सोरह मात्रा छन्द गति रूप चौपई लेखि ।
पन्द्रहसै सत्तानवे जानो भेद विशेखि ॥ १२४ ॥

रूपचौपईछन्द ।

तुव प्रसाद देखो भरि नैनौ । कही सुनी मनभावनि बैनौ॥
कब परिहै मोहन गल बाँही। चौपई ठिइतनी मनमाही॥

लक्षण ।

चारयो करना विद्युन्माला । मोती पोहै चंपकवाला॥ कर्ना सद्दु है सुखमा लसित॥ तिन्नाननगो भ्रमरविलसिता॥ तिन्ना नोयो समु किय मत्ता । कुसुमविचित्रा नयनय जत्ता ॥ गोसभसोगो हरि अनुकूले । दुज भभ तामर सोगगतूले॥ निजभे पने मालिनि निजुमंडी । नस्सासस-गहि जिय जानिय चण्डी॥चक्रभदुजदुज सगनहि थुलिका॥ ननगननग है प्रहरनकलिका ॥ जलोद्धतगती जस जसपगनो । मनिगुन दुजपिय दुज पिय सगनो ॥ ऐन भाग गहि स्वागतको है॥ चन्दबत्सरन भास प्रगट है ॥

निज जरि पावत मालती सदा । नभजरीहि पठवै प्रियं-
वदा ॥ रेणु रेल गहि है रथद्धतो । नभसयाहि द्रुत पाउ
शुद्ध तो ॥ पकअवलि भनि जो जलही सुनि । बटदश
लघुहि अचलधृति मनगुनि ॥ १२६ ॥

विद्युन्मालाछन्द ।

दूजे कोप्यो वासों भारी । नीरे नाहीं शृंगी धारी ॥
एरी क्यों जीवैगी बाला। चौंहाँ नच्चे विद्युन्माला॥१२७॥

चम्पकमालाछन्द ।

देख्यो वाको आननचन्दा । लूट्यो प्यारे आनँदकन्दा ॥
आई जीकी मोहनि बाला।कीजै हीकी चम्पकमाला १२८

सुखमा यथा ।

होतो शशिसो मान्यो मनमें । जान्यो हरि हैं तापैं क्षनमें॥
बीती सजनी बातें सुखकी । देखे सुखमा प्यारे मु-
खकी ॥ १२९ ॥

भ्रमरविलसिताछन्द ।

धीरे धीरे डगमग धरती । राती राती द्युति विस्तरती ॥
आवै आवै त्रिय मृदुहँसिता । आगे आगे भ्रमरविल-
सिता ॥ १३० ॥

मत्ताछन्द ।

आयो आली विषम वसंता । कैसे जीवी निअर न कंता॥
फूले टेसू करि बन रत्ता । चौहाँ गूंजै मधुकर मत्ता १३१॥

कुसुमविचित्रा ।

चलन कह्यो पै मोहिं डर भारी । परम सुगंधावह सुकु-

मारी ॥ अलि तहँ ह्वै है अधिक बिहारी । कुसुमविचित्रा वह फुलवारी ॥ १३२ ॥

अनुकूलछन्द ।

गोपिहुं ढूंढो ब्रत कत दूजा । कूबरहीकी करहु न पूजा ॥ योग सिखावै मधुकर भूलो । कूबरहीसों हरि अनुकूलो ॥ १३३ ॥

तोमरछन्द ।

तुअ दृगसों जननी दृग तेरो । नहिं सम ताहि लहै मनु मेरो ॥ जलचर खंज पराजय साजै । सखि नव तामर सो लखि लाजै ॥ १३४ ॥

नयमालिनीछन्द ।

पहिरत पाद जासु शितलाई । सखि तन होति कम्प अधिकाई ॥ तिय पिय स्वांग चीन्हि वह राई । यह नय मालिनि सुमन ले आई ॥ १३५ ॥

चण्डी यथा ।

जय जगजननि हिमालयकन्या । जैति जैति जय त्रिभुवनधन्या ॥ कलुष कुमाति मद मत्सर खण्डी । जयति जयति जनतारणि चंडी ॥ १३६ ॥

चक्र यथा ।

देव चतुर्भुज चरणन्ह परिये । याहि वनक मम हिय थिति करिये ॥ शंख रु गद बियकर निशि भरिकै । चक्र कमल त्रिय कर बिच धरिकै ॥ १३७ ॥

प्रहरनकलिका छन्द ।

दशरथसुतको सुमिरन करिये। बहु तपजपमें भटकि न मरिये॥ बिरद बिदित है जिन चरननको। प्रहरन कलि काटन दुखगनको॥ १३८॥

जलोद्धतिगति ।

घनो भगरु राक्षसै करतु है। न राम ढिगते सही परतु है॥ अगारगन वै ढरे तरानितैं। जलोद्धतिगती उठै घरनितैं॥ १३९॥

मनिगुन ।

अभिनव जलधर सम तन लसितं। अरुणकमल दल नैन हुलसितं॥ जयति शरद शशिसम वर वदनं। दिनमणिकुल दिनमणि गुण सदनं॥ १४०॥

स्वागता ।

याहि भांति तुम हूं जु खिझावै। बाल बात तब क्यों बनि आवै॥ नन्दलाल मटक्यो कब ऐसे। स्वागता सुकरती तुम जैसे॥ १४१॥

चन्द्रवर्त्मछन्द ।

ऊभि स्वांस लिय मैं दुख भरिकै। घेरि लीन्ह तहँ भौरनि अरिकै॥ और ज्योंत बलि होत न तबहीं। चन्द्रवर्त्म बिच ऊग्यो जबहीं॥ १४२॥

मालती यथा ।

सुमन लखे लतिका अनन्तमें। सरघनको सुख है वसं-

तमें ॥ मनमहँ मोदन भौंरके रती। खिलति न जौलगि मालती लती ॥ १४३ ॥

प्रियंवदा ।

नयन रेणु कन जाहिके परैं । मरत पीर नहिं धीरसो धरैं॥ रहति मो दृगनमें अरी सदा। तिय सरोज नयनी प्रियंवदा॥ १४४॥

रथोद्धता ।

है प्रभुत्व जगमध्य जो महा। भुक्तयुक्त सुख सात तौ कहा॥ राम पाइ मन नाहिं शुद्ध तो। तुच्छ जानि पुरुषार्थ उद्धतो॥ १४५॥

द्रुतयाछन्द ।

जिनहि संग निगरी निशि जागे । नयन रंग जन जावक पागे ॥ गहरु होत रिस तासु सँभारो । उतहि लाल द्रुत पाउँ न धारो ॥ १४६ ॥

पंकअवलि ।

मोहन बिरह सतावत बालहि। बाइ बकाति नहिं जानति हालहि ॥ बासर निशि अँसुआ वरषावति। पंकअवलि जहँई तहँ ठावति॥ १४७॥

अचलधृतछन्द ।

कुलिश सरिस वरदशन निदराशित। पुरुष वचन मुख कढ़ति कहत हित॥ सब तोहिं कहत मृदुल तन अनुचित। तिय तु अयुगुल अचल धृति उर नित॥ १४८॥

पद्धरियलक्षण दोहा ।

सोरह सोरह चहुं चरण पगन एक दै अन्त ।
छन्द होत यों पद्धरी कह्यो नागभगवन्त ॥ १४९ ॥

यथा पद्धरियछन्द ।

न भरै निशि घन तम भय विशाल । पद अटकत कंटक दर्भजाल ॥ मन सुमिरत भयभंजन गोपाल । पद्धरिय प्रेम मद मत्त बाल ॥ १५० ॥

अथ सत्रहमात्राप्रस्तारके छन्द दोहा ।

सत्रह मत्ता छन्दमें धारी त्रिजयो नीक ।
बाला तिरग पचीससै चौरासी दै ठीक ॥ १५१ ॥

धारी यथा ।

मयूरपखा शिरमें थिर काये । सुपीत पटा उरमें उरमाये ॥ चलै मुख चन्द विलोकि कुमारी । गये तुलसी वनमें गिरिधारी ॥ १५२ ॥

बाला यथा ।

मोरके पक्षको मुकुट आला । कंठमें सोहती मुक्तमाला ॥
श्याम घनरूप तन दृगविशाला । देखि री देखि गोपाल-बाला ॥ १५३ ॥

अथ अठारहमात्राके छन्द दोहा ।

प्रगट अठारह मत्तको रूपामाली होइ ।
वृत्तिसु इकतालीस सै इक्यासी जिय जोइ ॥
नौ गुरुरूपा मालिया अनियम माली बंस ।
सुयश संग प्रति पायमें छन्द होत कलहंस॥ १५४ ॥

रूपामाली यथा ।

नेहाकी बेली बोयों जीमैं । आछो थाल्हो कै राख्यों हीमैं ॥ उत्कंठा पानी दै पाली है । प्यारीजीको रूपा· माली है ॥ १५५ ॥

मालीछन्द ।

मुरली अधर मुकुट शिर दीन्हे है । कटि पट पीत लकुट कर लीन्हे है ॥ को जानै कब आयो सुनि आली । उरते कढ़ तनके हूं बनमाली ॥ १५६ ॥

कलहंसछन्द ।

मन वाम शोभ सरसी किन्ह नैये । मुख नयन पाणि पद पंकज ह्वैये॥ कलधौत नूपुरनकी छबि दीसी । कलहंस चेदुअनकी अवलीसी ॥ १५७ ॥

अथ उन्नीसमात्राके छन्द दोहा ।

उत्तम उनइस मत्तमें रतिलेखादि विचारि ।
सतसठिसै पैंसठि कहत वृत्तिभेद निरधारि ॥
सगन इग्यारह लघु करन रतिरेखा तुक चाहि ।
गनगनगन दै करन दै जानि इंदुवदनाहि ॥ १५८ ॥

रतिलेखाछन्द ।

सब देव अरु मुनिन मन तुलनि तोल्यौ । तब दास दृढ़ वचन यह प्रकट बोल्यौ ॥ इक ओर महि सकल जप तप विशेषो । इक ओर सियपतिचरण विरति लेखो ॥ १५९ ॥

इन्दुवदनाछन्द ।

दोषकर रंक सकलंक अति जोई । घाटि अरु बाढ़ि पुनि मासप्रति होई ॥ भाग अवलोकि इहि इन्दु बिच आली। इन्दुवदना कहत मोहिं वनमाली ॥ १६० ॥

अथ वीसमात्राके छन्द दोहा ।

होत हंसगति आदि दै छन्दनि मत्ता बीस ।
दश हजार नौसै उपर गनो भेद छयालीस ॥
बीसै कल बिन नियम हंसगति सोहै ।
मोभासोमो जलधरमाला जोहै ॥
भोरन विप्र साहि गजविलसित तन है ।
द्वौ दीप दीप किय कहत कवि जन है॥ १६१ ॥

हंसगति यथा ।

जिन जंघन कर रूप लियो बिन कारन । बारण काढ़े दंत फिरत दरबारन ॥ चरण वयेहू अरुण बाज नाहिं आयउ । तासु हंसगति सीखत किन बौरायउ ॥ १६२ ॥

गजविलसित यथा ।

नागरि कामदेवनृपकटक प्रबलु है । भौंहैं कमान भाल वर तिलक सुशर है॥ प्रेम सिपाह अश्व दृग चपल जुअ-ति है । तंबु निजंबु जानि गजविलसितगति है ॥ १६३ ॥

जलधरमाला छन्द ।

चौहां नच्चै विपुल कलापी येरी । पीपी बोलै पपिहो पा·

पी बैरी ॥ कैसे राखैं विरहिनि बाला जीको । जारैं कारी जलधरमाला हीको ॥ १६४ ॥

दीपकी यथा ।

यों होत है जाहिरे तोहिं ये श्याम । ज्यों स्वर्णसीसी भरयो ऐन मद बाम ॥ तू श्याम हिय बीच यों जाहिरे होत । ज्यों नीलमणिमें लसै दीपकी जोत ॥ १६५ ॥

लक्षण ।

विपिनतिलको ललनगो नरे रंग ना । गवन पिय तरहि गुरु प्रगट धवलहि गना ॥ छन्द निशिपाल किय मौन गुन गौनरे। चन्द्र सब लघु बरण रुद्र गुरु जौनरे ॥ १६६॥

विपिनितिलक ।

भुवनप्रति रामप्रति कैसे के जंगना । अरिन वनवास लिये संग लै अंगना ॥ जहँसु तहँ दास दमकै मनो दामिनी । विपिनतिलकै सकल वै भईं भामिनी ॥ १६७ ॥

धवल यथा ।

सुरसरितजल अमल सुचित्त मुनि वरानिको । गिरिश अंग अहिअंग वसन विधि धरानिको ॥ संगत गिरि तुहिनगिरि शरदशशि नवल है । सब उपर अधिक सियपति सुयश धवल है ॥ १६८ ॥

निशिपाल यथा ।

लाज कुल साज ग्रहकाज बिसरायकै । पा लगत लाल किहि जाल इत आइकै ॥ आशु चालि जाहि बलि तासु किन तासुके। भालहु अलाल निशिपालगत जासके १६०

चन्द्र यथा ।

कमल पर केदलिजुग तिनहिं पर गिरियुगल। तिनहिं पर विनहिं अवलम्ब सरवसजल ॥ निरखि बिबि गिरि बहुरि कम्बु भै चकित मति । उपर जगमगि रह्यो चन्द्र इक विमल अति ॥ १७० ॥

इक्कीसमात्राके छन्द दोहा ।

पवंगादि इकईसमें कीजै छन्दविचार ।
सत्रह सहस रु सातसै इग्यारह प्रस्तार ॥
चारि चकल इक पंचकल जानि पवंगम बंस।
तीनि बेर पिय रागना छन्द होत मन हंस ॥१७१॥

पवंगम यथा ।

यक कोउ मलयागिरि खोदि बहावतो । तौ कद दक्षिण पौन तिया निशि तावतो ॥ व्याकुल विरहिनि बालक खै भरि नयनको । निंदति बारहिबार पवंगम सैनको १७२॥

मनहंस यथा ।

खरयूथ मध्य तुरंग शोभ न पावई । नहिं स्यारमण्डल सिंह द्वौ सँग वावई ॥ खल संग त्यों जिय संतके दुखदाउ है ॥ मनहंसके नहिं कागसंगति चाउ है ॥ १७३ ॥

अथ बाईसमात्राके छन्द दोहा ।

मालतीमालादि दै छन्द बाइसै मत्त ।
भेद अठाइस सहस पर सै सत्तावन तत्त ॥ १७४ ॥

लक्षण ।

सर्वेदीहा मालतीमाला सावा । मोकनों द्वै दुज वर प्रियम

असंबाधा॥द्विज बर नंदनँदन सर कर्न बानिनी छै।जानहु बंशपत्र भरनो भभ लहु गुरु है॥ समद विलासिनी निज भजै न शंख करहो। नल रण भाग सातयुत जानहिं कोकिलको॥ मोतोयोंसोगो करिके मायहि पूरो। वेई बनौ नृत्यगती मत्तमपूरो॥ १७५॥

मालतीमाला यथा।

कित्ती तेरी भूमै है ज्यों कैलाशा। कैलाशामें जैसे शम्भूको बासा॥ शंभूजूमें गंगाजूकी धारासी। गंगाजूमें मालतीकी मालासी॥ १७६॥

असंबाधा।

रात्यो द्यो सै वाम जपत अतिवै तोपै। तू ताहीको नाम कहति मति ले मोपै॥ पापी पीडावंत जगत जन सुनु राधा। जाके ध्याये होत अकलुष असंबाधा॥ १७७॥

बानिनी यथा।

ललित दुकान ढार देख शुभ कोन आवै। सुमुखि सुबोल भूलिको नहिं बिकाइ जावै॥ दिन दिन होति दास अतिरूपखानिनी है। करि बहु भावसेति मनु लेति बानिनी है॥ १७८॥

वंसपत्र यथा।

घूंघुरवारि श्याम अलकै अतिछबि छलकै। चारु मुखारविन्द लुब्ध्यो कि भँवर ललकै॥ शुभ्र बुलाक मुक्तद्यु-

ति कै छबि तिहुं पुरकी। दाससु बंसपत्र यह कैसो नक्त-
मसुरकी ॥ १७९ ॥

समुद्रविलासिनी यथा।

कुच खुलि जानि ऐंठि अँगिरानि भित्ति धरिकै। लखत
गुपाललाल पट ओट ओट करिकै ॥ परशत भूमि केश
उर लाज लेश न कहूं। समद विलासिनी वसन तो सँभा-
र अजहूं ॥ १८० ॥

कोकिलक यथा।

अधर पियूष पान तियको न करै जबलों। मधुर शिंगार
उक्ति कवि कीन लगै तबलों ॥ पियत न आम्र और म-
धुको जबलों तिलको। तबलगि शब्द होत मधुरो नहिं
कोकिलको ॥ १८१ ॥

मत्तमयूर यथा।

देख्यो वाही अंगप्रभाको सुनि बाला। जान्यो ह्वै है आ-
वत कारी घनमाला ॥ आयो चाहै आय घरीमें वनमा-
ली। नच्चै कूकै मत्तमयूरो सुनि आली ॥ १८२ ॥

माया यथा।

काहेकी कीजे मन एती दुचिताई। काहूसों वाकी लिपि
मेटी नहिं जाई ॥ ताहीको ध्यावै मन वाचा अरु काया।
सोई पालैगो जिन देही निरमाया ॥ १८३ ॥

तेईसमात्राके छन्द दोहा।

हीरकहढ़ पट आदि दै तेइस मत्त अनंत।
छयालिस सहस रु तीनिसै अडसठ भेद कहंत ॥

रलतलायकल कम दृढपट गुरु जत नित्त ।
तीनि टगन यकरगन दै हीरक जानो मित्त ॥ १८४ ॥

दृढपट यथा ।

पहिरत जामा झीनको चहुं था लगि झूम्यो । बंदनि बांधतहू दुहूं हाथनिमें घूम्यो॥डारि दयो री पेंचमें मेरो मन आली । दृढ पटुको कटि कसतही मोहन वनमाली १८५

हीरकछन्द ।

जाहु न परदेश ललन लालच उर मंडिकै । रतननिकी खानि सुतिय मन्दिरमें छंडिकै ॥ विद्रुम औ लालनि सम वोठनि अवरेखिये। हीरक अरु मोति असन दंतनि लखि लेखिये ॥ १८६ ॥

चौविस मात्राके छन्द दोहा ।

लोलादिक अहिपति कह्यो छन्दमत्त चौवीस ।
दश पचहत्तर सहस पर जानो वित्त पचीस ॥ १८७ ॥

लक्षण ।

पाँचो पाँचो गोदिजविय वासंतीकोछै । भासं मत्तन ताटकै देखो जात चकित है ॥ गो कर्नौ पियमो कर्नै द्वै लोदुगलोला॥विद्याधारी सब गुर अनियम ह्वै है रोला १८८

वासंतिछन्द ।

देखे माते भौंर करत ये दौरा दौरी । आवैंगे गोपाल सदनको जोराजोरी ॥ वैरी बैठी शोच करति हैं जीमें भूले । लागो चैतो मास विमल वासंती फूले ॥ १८९ ॥

चकिता छन्द ।

पीतवसनकी काया सोती मोहनि मनकी । सोहति सजनी त्यों पाटीरी खौरानि तनकी ॥ तो तन कबके हेरैं आलीने सकत कितैं । निश्चल अँखियां सोहैं मानो खंजनचकितैं ॥ १९० ॥

लोला छन्द ।

आयेहू तरुणाइ लीन्हे हो लरिकाई । होती क्यों सखिया में आपै आप हँसाई ॥ लज्जा बैरिनि भानो ठानो मंजुल बोलैं । प्यारे प्रीतमजूसों कीजै कामकलोलैं ॥ १९१ ॥

विद्याधरी छन्द ।

विद्या होती वैभौमें आनन्दैकारी । आपतकाले जीकी शिक्षा देनेवारी ॥ सुक्ख दुःखेहीते नाहीं होती न्यारी । ताते हूजे मेरे भाई विद्याधारी ॥ १९२ ॥

रोला ।

रवि छबि देखत घूघू घुसत जहां तहँ बागत । कोकनिको ताहीसों अधिक हियो अनुरागत॥ त्यों कारे कान्हहि लखि मनुन तिहारो पागत । हमको तौ वाहीते जगत उज्यारो लागत ॥ १९३ ॥

पचीस मात्राके छन्द दोहा ।

गगनंगादि पचीस कल भेद होत है लाष ।
इकइस सहस रु तीनिसै तिरानवे पुनि भाष ॥ १९४ ॥

पुनः ।

सौकल चारि पचीसको छन्दजाति गगनंग ।
पगपग पांचो गुरु दिये अति शुभ कह्यो भुजंग ॥१९५॥

गगनंगना छन्द ।

निरखि सौतिजन हृदयनि रहै गरउकों ढंगना । पटतर हित सतकविके मनको मिटै फलंगना ॥ वन्दन उघारि दल हिया क्षणकु बैठि करि अंगना । चन्द पराजय साजहि लजित करहि गगनांगना ॥ १९६ ॥

छब्बीस मात्राके छन्द दोहा ।

छब्बिस कलमें चंचरी आदि लाख गनि लेहु ।
सहस छानवे चारिसै अट्ठारह कहि देहु ॥ १९७ ॥

पुनः ।

तीनि रागना पियहि दै रात चंचरी चारु ।
सोरह दश जति अन्त गुरु नाम विष्णुपद धारु ॥१९८॥

चंचरीछन्द ।

फागु फागुनमाल बीतत धाम धामनि छंडिकै । चैतमें वन बाग वापिनिमें रहै वपु मंडिकै ॥ फुल रंग सजै लता द्रुम भौंर वाद्य बजावहीं । कीर कोकिल सारिका मिलि चंचरी कल गावहीं ॥ १९९ ॥

विष्णुपदछन्द ।

कैसे कहों सहस सुरपतिसे सिगरे दृष्टि परै । दास शेष सत सहसयोग कहवेको कहत डरै॥ कह्यो लिख्यो चाहै

अनदेखे तु निज वोर तके। है यह सहस हजार विष्णुपद महिमा लिखि न सके॥ २००॥

सत्ताईस मात्राके छन्द दोहा ।

हरिपद आहि सताइसै जानै छन्द अनेक ।
तीनि लाख सत्रह सहस आठैसै दश टेक ॥ २०१॥

हरिपदछन्द ।

बिथा और उपचार अब तू करै सुकौने ज्ञानु । अजौ न कछू न सान्यो मूरुख कह्यो हमारो मानु॥ पाप विवश गौतमकी तिय ज्यों मति ह्वै रही पषानु। तासु भगति जो दास चहै तौ हरिपद उरमें आनु ॥ २०२॥

अट्ठाईस मात्राके छन्द दोहा ।

अट्ठाइसमें गीतिका आदिक कह्यो फणीश ।
पांच लाख चौदह सहस द्वैसै पर उनतीस॥ २०३॥

लक्षण दोहा ।

चारि सुगण धज गीतिका भरननज भय नरिन्द ।
अनियम वरन नरिन्दगति दोवै कह्यो फणिन्द ॥२०४॥

गीतका ।

इहि भांति होहु न बावरी बलि चेत जीमहँ ल्यावहू । वृषभानको यह भौन है कह कान्ह कान्ह बतावहू॥ मुसुकाति हौ किहि देखिकै कहि देखि गात गोवावहू । कर बीन लै अतिलीन ह्वै यह गीतिकाहि सुनावहू ॥ २०५॥

नरिन्दछन्द ।

सिंह विलोकि लंक मृगदग बरु चाल करी मदधारी ।

जानहिं आपु जाति निज मनमहँ करै प्रीति अधिकारी॥
कोल किरात भिल्ल छबि अद्भुत देखहि होहि सुखारी।
राम विरोध सुखहि वन विचरहि शत्रु नरिन्दकुमारी॥

दोवै छन्द ।

तुम बिछुरत गोपिनके अँसुवा वृज बहि चले पनारे। कछु दिन गये पनारेते वै उमड़ि चले ज्यों नारे॥ वै नारे नदरूप भये अब कहो जाउ कोइ जोवै। सुनि यह बात अयोग योगकी है है समुदन दोवै॥ २०७॥

उनतीस मात्राके छन्द दोहा ।

उनतिस मत्ता भेदमें मरहट्ठादिक देखि ।
आठ लाख बत्तिस सहस चालिस भेद विशेखि ॥ २०८॥

मरहट्ठाछन्द ।

सुनि माल दुतिय उर जनकी नाई निपटहि प्रगट न होई। अरु गुज्जरयुवतिपयोधरकी विधि निपट न राखहु गोई॥ करि प्रगट दुरेके बीच राखिये यों अक्षरकी चोज। ज्यहि विधि मरहट्ठवधू राखति है बिच कंचुकी उरोज॥ २०९॥

तीस मात्राके छन्द दोहा ।

तीस मत्तमें सारँगी चतुर पदो चौबोल ।
तेरह लख छयालिस सहस दुसै उन्हत्तरि डोल ॥२१०॥

पुनः ।

तिथिग सारिँगी चतुर पद दुकल सात चौमत्त ।
तीस मत्त चौबोल है सोरह चौदह तत्त ॥ २११ ॥

सारंगीछन्द।

देखो रे देखो रे कान्हा देखीदेखा धावोजू। कालिन्दीमें कूद्यो कालीनागै नाथ्यो लावोजू॥ नच्चै बाला नच्चै ग्वाला नच्चै कान्हाके संगी। बज्जै भेरि मृदंगी तम्बूरा चंगी सारंगी॥२१२॥

चतुष्पदछन्द।

संग रहे इन्दुके सदा तरैया तिनके जिय अभिलाषै। भुवन जनित कटि बरषा ऋतुको तिहि इन्दुवधू सब भाषै॥ यह जानि जगतमें रूप रुखी ह्वै वासर सुमति बतावै। अतिकूर ककाररूप बिनु चीन्हे परम चतुर पद गावै॥

चौबोलछन्द।

सुरपतिहित श्रीपति वामन ह्वै बलि भूपतिसों छलहि चह्यो। स्वामिकाजहित शुक्र दानहूं रोंक्यो बरु दृग हानि सह्यो॥ सुमति होत उपकार लाखहि तौ झूठो कहत न शंक गहै। पर अपकार होत जानहिं तौ कबहुं न सांचो बोल कहै॥२१४॥

इकतीस मात्राके छन्द दोहा।

इकतिस मत्ता भेदमें छन्द सवैया जोहि।
एक लाख अटहत्तरै सहस तीनिसै नोहि॥२१५॥

यथा।

अरब खरबते लाभ अधिक जहँ चिन हर हासिल लाद पलान। सेतिहि लये देवै क्षाराजी और हि दये न अपनो ज्यान॥ ऐसो राम नामको सौदा तोहिं न भावत मूढ अ-

यान । निशि दिन जात मोहवश दौरत करत सवैया जन्मसिरान ॥ २१६ ॥

रूप सवैया छन्द दोहा ।

रूप सवैया बत्तिसै कला लाख पैंतीस ।
चौबिस सहस रु पांचसै अठहत्तर विधि दीस ॥ २१७ ॥

लक्षणप्रतितुक ।

आठो कर्ना पाये दीन्हे ब्रह्मा छन्दै जानो धीरा । सातो हारा सुप्रीमो पुनि सुप्रीमो गुर है मंजीरा ॥ करि हारा भोगहि कर्ना पीमहि मागो शंभूको अंसी । आठो मोनो ठानो डंडो गुरयुगसहित परम छबि हंसी ॥ मत्ताक्रीडा चारो कर्ना यकल चतुर्दश गुरु तल धरिये । सालूरकर विय गुरु छब्बिस लघु झलपर प्रगट बहुरि गुरु करिये ॥ जानि क्रौंचौ गोलय गोलय दुज करि त्रिगुण सगुन झर परत्यै । भोत तुनी तो लगनि लखिय ये तन्वीकी है ॥ गोविन्दा तेरी इच्छाकेती शंभू ब्रह्मा ठानै जू । तूही संसारै विस्तारै तूही पालै औ ज्यावै तू ॥ २१८ ॥

मंजरीछन्द ।

मोह्यो री आली मेरो मन श्रीवृन्दावन शोभा देखे । देखे रीझैगी तोहू अति मैंही भाषति रेखा रेखे ॥ एरी कान्हा तूको निर्त्तन कोऊ चित्त न राखै धीरा । जोटी जोटा नच्चै ग्वालिनि बज्जै झालरि औ मंजीरा ॥ २१९ ॥

शंभूछन्द ।

तिय अरधंगा शिरमें गंगा गल भोगीराजा राजै जू । नि-

रखै सत्ता निज नाचत्ता डमरू डौडौडौ बाजै जू॥ संग बे-
ताली कर दै ताली सुखदानी बानी गावैजू। धनि प्राणी
ते जगु जानी जे नित ऐसो शंभू ध्यावै जू॥ २२०॥

हंसीछन्द ।

जाको जी जासों पाग्यो सो सहजउ तदपि सुखद अति
होई। जो नाहीं जीको भावै सो अतिशुभ समुझि चहत
किमि कोई॥ कलबकीको कैसे भावै यदपि मुकुत अति
जगत प्रशंसी । संसारौ नीको लागै पै अनकन कबहुं
चुगति नहिं हंसी॥ २२१॥

मत्ताक्रीडाछन्द ।

काहूको थोरो दोषी कै सहन कहत प्रभु परम विपति-
को। सो तो जानै संसारै नारद सन भगत सहउ दुख
अतिको॥ काहू काहू भूले भूले त्रिभुवन पति बकसत
शुभ गतिको । देखा हाथी मत्ताक्रीडा जलमहँ करत न
रहेउ भगतिको॥ २२२॥

सालूछन्द ।

सौदामिनि घन जिमि विलसत हरि परिहरि पियर पट
सखि उहि रुखमें। देखत कलुख भयो दिन उडगण हुत-
भुक परिय रुइय घन दुखमें॥ त्योंहीं इहि रुख कुंवरि य-
मुनतट निरखि बरषत सुखसुखमें। सालू रंग संग लसत
सुनत रुचि छन रुचि सरि चमकति तिमि मुखमें॥२२३॥

क्रौंचछन्द ।

सेरन कैसी पौरुष बातैं किमि करि कह उडगण बिच बरणी । क्यों सुख सारीलौं पढि जानै यत्ननि करि बक औधक घरणी ॥ ज्ञानिय विद्या जानु जनाये नहिं जड कबहुं बुधनि यह बरणी । तूल क्रौंचो क्यों करि हँसै गनि गनि धरत धरत पग धरणी ॥ २२४ ॥

तन्वीछन्द ।

देखि सशे कै अमल जत्तमै लोग बखानत सहि जूठहाई । आननशोभा तरुणि प्रगटिकै जीतन श्वेत वसन सजि आई ॥ फूल सरनिको मुग्धनि बसकै जाहिर भो जग मन्मथ धन्वी । जीतन ताको चितवनि शरसो धीर प्रवीन सकल करि तन्वी ॥ २२५ ॥

सुन्दरीछन्द दोहा ।

ससग विप्र दुग सारवाति छन्द सुन्दरी जान ।
पद पद मत्त बतीस गनि चौविस वर्ण प्रमान ॥ २२६ ॥

सुन्दरी यथा ।

कुचकी बढ़ती यों छिन छिनकी मेरो मन देख तरी झिमयो । दरकी आँगिया चारिक पहिरे अरु चारिकको टुटि बंद गयो ॥ कटि जात परी है खिन खिन खीनी याविधि यौवन जोर ठयो । जबहिं तब नीवी कसतहि देखै सुन्दरिको दिन द्वैक भयो ॥ २२७ ॥

दोहा ।

इमि द्वैते बत्तीस लगि वृत्ति बानवे लाष ।
सत्ताइस हज्जार पर चौसै बासठि भाष ॥ २२८ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राप्रस्तारछन्दवर्णनं नाम
पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

अथ मात्रामुक्तकछन्द दोहा ।

घटे बढ़े कल दुकलहू वहै भेद अभिराम ।
तेहि गनि मत्ता छन्दके मुक्तकमें गुणधाम ॥ १ ॥

चित्र तथा बनीनीछन्द दोहा ।

सोरह सत्रह कलनिको चित्र बनीनी होइ ।
चारि चौकमें तीसरो यगन कहै सब कोइ ॥ २ ॥

यथा ।

लीन्ही जिन मोल भाय चोखे । दीन्ही तुमको बिथा अजोखे ॥ कीजै अँखियानकी कनीनी । ल्याई सुविचित्र हो बनीनी ॥ ३ ॥

नंदलाल गने न शीत औ घाम । सेवै तुव द्वार आठहू याम ॥ फूकती तुम तासु लेतही नाम । पवि चाहि कठोर तोहि यो बाम ॥ ४ ॥

दोहा ।

सत्रह अट्ठारह कलनि छन्द हीरकी तन्त ।
नन्दभुजनि विरमाति चलै दुकल त्रिकलहू अन्त ॥ ५ ॥

यथा ।

दास कहै बुधि थकै धीरकी । देखि प्रभा अद्भुत पाटीर-
की ॥ बेशरिकी केशरिया चीरकी । वारनीकी ढार
नीकी हीरकी ॥ ६ ॥

पुनः ।

दंतनकी चारु चमक देखि देखि । बिज्जुछटा मन्द प्रभा
लेखि लेखि ॥ मोहित ह्वै दास घरी चारि चारि । कोन
चलै जीवन घन वारि वारि ॥ ७ ॥

दोहा ।

अट्ठारह वन इस सकल छन्द भुजंगी मानि ।
नैनततगहै चन्द्रिका वाकी गति पहिंचानि ॥ ८ ॥

भुजंगीछन्द ।

लला लाडिलीकी लखी पीठिमें । तहां श्याम वेणी परी
दीठिमें ॥ मनो कांचनीकेदलीपत्र है । भुजंगी परी सो-
वती तत्र है ॥ ९ ॥

चंद्रिकाछन्द ।

कुरव कलरवौहू करै बोलिकै । द्विरदगति हरै मन्दही
डोलिकै ॥ दशनद्युति लजीली करै दामिनी । हसनिसन
जिते चन्द्रिका भामिनी ॥ १० ॥

नांदीमुखी दोहा ।

पंच लहू परम गन त्रय नांदीमुखी विचित्र ।
गति लीन्ही नियमो तजै वहै नाम है मित्र ॥ ११ ॥

यथा।

जन्म प्रभु लियो अवधमें लूटि मंची। सुकवी सिर्व झाक-
नि वस्तु एकौ न बांची॥ द्विजनि किये बिरागी याके आदि
सुखीकै। नृपति जब उठे श्राद्ध नांदीमुखीकै॥ १२॥

दोहा।

वोनइसकै बीस कल छन्द होत सो हंस।
नन्द करन है अन्तरो कै है रजवतंस॥ १३॥

यथा।

पद्म बैठक मुक्त भोजन छोंडिकै। तू सहै दुख भूख को पन
वोडिकै॥ दास हास करै घने बक बंस रे। तोहि ह्यां बसु
वास उचित न हंस रे॥

पुनः।

भौर नाभी बीच गोते खाइ खाइ। बूडि गोरी चित्त मेरो
हाइ हाइ॥ चाहि गिरि गिरि गाहि तिरि तिरि फेरि
फेरि। दास मेरे नयन थाके हेरि हेरि॥ १४॥

सुमेरु छन्द दोहा।

कल वोनइसै बीसको छन्द सुमेरु निबेरि।
लहू मगन लहु भगन यों कहुं अन्त लहु फेरि॥ १५॥

यथा।

करे कोवाकु चरचा लोगुआली। लगाई क्या करेंगी
कै कुचाली॥ प्रभा जो कान्हजूको उतरी है। सो मेरे
नयन हूकी पुतरी है॥ १६॥

प्रियाछन्द दोहा ।

बाईसै तेईस कल छन्द प्रिया पहिचानी ।
चलनि चारु संगीतकी वरणत हैं सुखदानि ॥ १७ ॥

यथा ।

तो छूटत छूटी सिगरी शीत लई है । यों अंग सबै वा दिनते आगि भई है ॥ राखै रहि है दास हमै दूरि हियासों यों । पंथी संदेशो कहिवी प्राणप्रियासों॥१८॥

हरिप्रियाछन्द दोहा ।

बीस इकीसौ बाइसौ कला हरी प्रियछन्द ।
तीनि छकल पर देहु गुरु नन्दकि है गुरुबन्द ॥ १९ ॥

यथा ।

हरति जु है दीननको संकट बहुत है । विनवत तिहि चितवनि हित दास दास है॥ करनि हरनि पालनि तू देवि आपुही । शंभुप्रिया ब्रह्मप्रिया हरिप्रिया तुही ॥२०॥

पुनः ।

करति जु है दीननिके संकटको हीन । विनवत तिहँ चितवनि हित दास दास दीन॥करनि हरनि पालनि तू देवि सर्व ठौर । शंभुप्रिया ब्रह्मप्रिया हरिप्रिया न और॥२१॥

पुनः ।

हरति जु है दीननिको संकट बहुतेरो । विनवत तिहि चितवनि हित दास दास तेरो ॥ करनि हरनि पालनि तू देवि आपुही है। शंभुप्रिया ब्रह्मप्रिया हरिप्रिया तूही है२२

दिगपालछन्द दोहा ।

होत छन्द दिगपाल कल बाईसौ तेईस ।
चौबीसौ पूरो भयो हैं दूनो दिगईश ॥ २३ ॥

यथा ।

सो पाय आजु डोलै मही शीत धूपमें । विधि बुद्धि तुच्छ जाकी महिमा अनूपमें ॥ हर जासु रूप राखै हिये बीच सब दाहि । दिगपाल भाल जाकी रज राजती सदाहि२४

पुनः ।

सखि प्राणकी सँघाती प्यारी नहीं लगै री । सुखदानि वानि तेरी अति दूरिको भगै री ॥ अलि कान्ह प्राण मेरो निज साथ लै गयो है । मनु आपनो निमोही वह मोहि दै गयो है ॥ २५ ॥

अविधा छन्द ।

सग्गना रग्गना जगंनु लगै । रग्गना रग्गनातकोर दगै ॥ अविधा छन्द पाय नाग कहंत । सो रहो सत्रहो अठारह मन्त ॥ २६ ॥

यथा ।

कान्हकी त्योंर तेग चोखी है । रीति यामें कहा अनोखी है ॥ पविसे मों हिये जु लागि उठै । अविधा ज्यों वियोग आगि उठै ॥ २७ ॥

सायकछन्द ।

सगनागो सगनागो सगना । रगना दीहु नहीं दोस-

गना ॥ लहु आद्यंत परै सत्रह लेखि । नाम है सायक या छन्दहि देखि ॥ २८ ॥

यथा ।

अँखियां काजरकी कोर नहीं । भृकुटी औ तिरछी तौर नहीं ॥ दास ये प्राणनिके घायक हैं । बिसु हैं खंजर हैं सायक हैं ॥ २९ ॥

भूपछन्द ।

सगनागो सगना । रग्गना आदि भना ॥
लहुवो अन्त भलोइ । भूप शिव सूरकलोइ ॥ ३० ॥

यथा ।

भावती जाति किते । नेकु तो ताकि इते ॥
तेरोई घायल हौं । भूपसो हाय लहौं ॥ ३१ ॥

मोहनी छन्द ।

सगनागो सगनागो सगनागो सगना ।
रग्गना आदि दियेहु न कछू दी सगना ॥
बाइसे तेईस कल अन्त लहु चौविस होइ ।
मोहनीछन्द कहै याहि सयाने सब कोइ ॥ ३२ ॥

यथा ।

ढूढे हू है न तिती पंकजके काननमें । सुखमा दास जिती मोहनके आननमें ॥ न तिती जानि परै मन्मथके बाननमें । मोहनी रीति जीती है बसुरी ताननमें ॥ ३३ ॥

अथ गीताप्रकरण दोहा ।

चौविस कल गीता मच्चरी । रूपमाल पहिचानि ।

लघु दै आदि पचीस कल सुगीतिका उर आनि ॥
द्वै द्वै आदि छबीसु करि गीता कहौं विशेषि। गुरु दै अन्त सुगीतिके शुभ गीता अवरेखि॥ कारि गीता गुरु अन्त हरि गीता अट्ठाईस। अन्त लहू अतिगीत करि सताइसौ उनतीस॥ ३४॥

अथ रूपमाला यथा।

जाति है बन वादिही गल बांधिके बहु तंत्र। धामहीं किन जपत कामद रामनाम सुमंत्र॥ ज्ञानकी करि गूद-डी दृढ तत्व तिलक बनाउ। दास परन अनूप सगुन सरूपमाला गाउ॥ ३५॥

सुगीतिका छन्द।

हजारकोटि जुहोइ रसना एक एक मुखग्र। इडा अरु बिन जो बसै रसना निमांडि समग्र॥ खरो रहै दिगदास तनू धारि देव परम पुनीत। कहै कछू अहिराज तव ब्रजराज तुव जस गीत॥ ३६॥

गीताछन्द।

मन बावरे। अजहू समुझि संसार भ्रम दरियाउ। इहि तरनिको यह छोडिके कछु नाहिं और उपाउ॥ ले संग भक्ति मल्लाह करि आरूप सो लै लाउ। श्रीरामसीता चरित चरचा शुभ्र गीता नाउ॥ ३७॥

शुभगीता छन्द।

विलोकि दुलहिनि मेलि जो तन फूल माल बिराजई।

रसाल दूलह शीश सुन्दर मौरकी छबि छाजई॥ वसंत के गृह आजु व्याह उछाह परम पुनीत है। चकोर कोकिल कीर भामिनि गावती शुभ गीत है॥ ३८॥

हरिगीत छन्द।

वनमध्य ज्यों लखि साज संयुत व्याध वासहि सज्जतो।
पशु पक्षि मृगया योग निज निज जीव लै लै भज्जतो॥
त्यों मोह मद पैशुन्य मत्सर भाजि जात सभीत है। जब दासके उर भक्तिसंयुत ज्यों सतो हरिगीत है॥ ३९॥

अतिगीता छन्द।

चैत चांदनिमें उतै मुरली बजाई नंदनंद। तान सोवति तानको गलितान किय विधि बंद बंद॥ ता समय वृष-भानुनन्दिनि ह्यां गई चलि फंद फंद। मोहि मोहन आगि रे अवलोकिके मुख चंद चंद॥ ४०॥

शुद्धगालक्षण।

यगन गुरु करि चौगुनो छन्द शुद्धगा होइ।
अन्त घटै कल दुकलहू वहै कहै सब कोइ॥ ४१॥

यथा।

झखै बैठी कहा बौरी अरी कान्हा कहा जैहैं। सुतो याही घरीमें देखि तेरे पासही ऐहैं॥ सिखायो मानिकै मेरो सितारा लै बजावै तू। सखी वा द्यौसकी नाईं केदारा शुद्ध गावै तू॥ ४२॥

लीलावतीछन्द दोहा।

द्वै कल दै फिर तास कल लीलावती अनेम।

दुगुन पद्धरियके किये जानो वहै सप्रेम ॥ ४३ ॥

यथा ।

पीताम्बर मुकुट लकुट वनमाल वै सोई दरशावै । मुसुकानि विलोकनि मटक लटक बढि मुकुर छाहते छबि पावै ॥ मो विनय मानि चली वृन्दावन बन्शी बजाइगो धन गावै । तौ लीलावती श्याममें तौ मैं नेकु न उर अन्तर आवै ॥ ४४ ॥

यथा ।

जेहि मिलत न तू तेहि रैनि सांझहीते रट लावत तोहिं तोहिं । अधरात उठत करि हाय हाय पर्यंक परत पुनि मोहिं मोहिं॥ कबको ढिग ठाढ़े हहा खात यह खिन्न गात गति जोहि जोहि । किय केवल तू यह लाल हाल दिन रैनि बिसासिनि कोहि कोहि ॥ ४५ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राके मुक्तछन्दवर्णनं नाम षष्ठस्तरंगः॥६॥

अथ जातिछन्दवर्णनं दोहा ।

प्रस्तारनिकी रीतिसो करि कछु भिन्न विभाग ।
जात छन्दवर्णन कियो बहुविधि पिंगल नाग ॥ १ ॥

दोहा प्रकरण ।

तेरह ग्यारह तेरहै ग्यारह दोहा चार ।
दोहा उलटे सोरठा विदित सकल संसार ॥ २ ॥

दोहा ।

मन बालक समुझाइये तुह्मैं विनय रघुनाथ ।
न तरु बोलाये कौनके आवे चन्दो हाथ ॥ ३ ॥

दोहादोष ।

प्रथम तीसरे चरणमें जगन जोहिये जासु ।
सो दोहा चंडालिनी बोलै बिबिधि बिनासु ॥
बारह लघु बाईस लघु बत्तिस लघु लै मानि ।
चारि वरण दोहा कही बाकी लघु लौं जानि ॥ ४ ॥

सोरठा ।

सोवन दीजे धाइ भीजे नेकु विभावरी ।
अबै गहो जनि पाइ सोरठानि है मेखला ॥ ५ ॥

अथ दोही ।

दोहाके तेरहनिमें द्वै द्वै कला बढाइ ।
कीजै दोही दोहरा एको एक घटाइ ॥
जनि बाँह गहो हो जानती लाल तिहारी रीति ।
हो निर्मोही नित्तके करो दोही दिनकी प्रीति ॥ ६ ॥

दोहा ।

जातन कनक तरयो नों लगत चौहरो लाल ।
मुकुतमाल हिय तेहरो दोहरो बेंदा भाल ॥ ७ ॥

उल्लाला ।

करि विषमदलनि पन्द्रह कला सम पायनि तेरह रहै ।
तुक राखि अट्ठाइस कलनिपर उल्लाला पिंगल कहै ॥ ८ ॥

यथा ।

कहि काव्य कहा बिन रुचिरमति मतिसु कहा बिनहीं बिरति । कह बिरति उलाल गोपालके चरणनि होइ जु प्रीति अति ॥ ९ ॥

चुरिआला ।

दोहा तलके अन्तमें और पंच कल बन्द निहारिये। नागराजपिंगल कहै चुरिआला सो छन्द विचारिये॥ १० ॥
मैं प्रिय मिलन अमी गुनो बलिबिसु समुझि न तोहिं न हो रति। झटकि झटकि कर लाडिली चुरियाल लाखनि की कत फोरति ॥ ११ ॥

ध्रुवाछन्द ।

पहिलेहि बारह कल करु बहुरे हुँ सत्त।
इहि विधि छन्द ध्रुवा रचु वन इस मत्त ॥ १२ ॥

यथा ।

ध्रुवहि छांडि जो अध्रुवसे वन जाइ।
अध्रुव तासु नशै है ध्रुवहु नशाइ ॥ १३ ॥

घत्ताछन्द दोहा ।

दश बसु तेरह अर्धमें समुझिय घत्ता छन्द ।
ग्यारह मुनि तेरह विरति जानो घत्तानन्द ॥ १४ ॥

यथा ।

मोहन मुख आगे अति अनुरागे मैं जु रही शशि छबि निदरि। दुख देत सुआली बिनु बनमाली घत्ता लहि चुफतन अरि॥ घत्ता सखि सोवत मोहि जानि कछु रिस मानि आइ गयो गति चोरकी। सोयों ढिगहि चुपाइ कहि नहिं जाइ घत्ता नन्दकिशोरकी ॥ १५ ॥

दोहा ।

हरिपद दोवे चौबोलो द्वैही द्वै तुक जानि ।
दोहा प्रकरण रीतिमें लिख्यो दास उनमानि ॥ १६ ॥

अथ चौपैयाप्रकरण दोहा ।

चारि चरणमें जाति जमक तुक बरणनि करि नेम ।
जाति छन्द बरण्यो अहिप सोऊ सुनी सप्रेम ॥ १७ ॥

चौपैयाछन्द दोहा ।

दश बसु बारह चिरतिते चौपैया पहिंचानि ।
चारि चरण चौगुन किये होत निपट सुखदानि ॥ १८ ॥

चौपैया यथा ।

तल बितल रसातल गगन भुवनतल सृष्टि जिती जग-
माहीं । पुर राम सुथलमें कानन जलमें बाहि रहित कछु
नाहीं ॥ पिय मिलहि न रामहिं ताजि सिय बामहिं नहिं
बचाउ कहुं भागे । सुरपतिसुत कांचो सब जग नाचो
बांचो पैआँ लागे ॥ १९ ॥

लक्षणप्रतितुक ।

दश वसु दश चारे बिरति बिचारै पद्मावति तल गुरु
दोई । याही बिधि ठानो दुर्मिल जानो अंत सगन करनो
होई ॥ दश बसु करि योंही चौदह त्योंहीं अंत सगन है
दण्डक लो । दश बसु वसु संगी पुनि रस रंगी होत त्रि-
भंगी छन्द भलो ॥ २० ॥

दोहा।

आठ आठ चौकल परै चारै रूप निशंक।
भूलेहु जगनन दीजिये होत छन्द सकलंक ॥ २१ ॥

पद्मावती।

व्यालिनिसी बेनी लखि छबि सेनी तज तन आशा मोरें जू। शशिसो मुख शोभित लखि ह्यो लोभित लावत टकी चकोरें जू॥ निकसत मुख श्वासैं पाइ सुवासैं संगन छोडत भौरें जू। बाहिर आवति जब पद्मावति तब भीर जुरति चहुँ ओरें जू॥ २२ ॥

दुर्मिलछन्द।

इक त्रिय व्रत धारी पर उपकारी पित गुरु अज्ञा अनुसारी। निरसंचय दाता सबरस ज्ञाता सदा साधुसंगति प्यारी॥ संगरमैं सूरो सब गुन पूरो सरल सुभावं सत्ति कहै। निरदं भगति वर विद्यानि आगर चौदह नर जग दुर्मिल है॥ २३ ॥

दण्डकलाछन्द।

फल फूलनि ल्यावै हरिहि सुनावै यहै लायक भोगनिकी। अरु सब गन पूरी स्वादनि रूरी हरनि अनेकनि रोग निकी॥ हँसि लेहि कृपानिधि लखि योगी विधि निंदहि अपने योगनकी। नभते सुर चाहैं भागु सराहैं फिरि फिरि दण्डक लोगनकी॥ २४ ॥

त्रिभंगी छन्द ।

समुझिय जगमें को फल मनमें हरि सुमिरनमें दिन भरिये। झिगरो बहुतेरो घेरु घनेरो मेरो तेरो परिहरि-ये ॥ मोहन बनवारी गिरिवरधारी कुंजविहारी पगु परिये। गोपिनको संगी प्रभु बहुरंगी लाल त्रिभंगी उर धरिये॥ २५॥

जलहरनछन्द दोहा ।

लघु करि दीन्हे बत्तिसो जलहरना पहिंचानि ।
तिरभंगी पर आठ पुनि मदनहरा उर आनि ॥ २६ ॥

यथा जलहरनछन्द ।

सुदि ल्यउ मिथुन रबि उमड़ि घुमड़ि फबि गगन सघन घन झपकि झपकि। करि चलति निकट तन क्षन रुचि क्षन क्षन खग अब झरस सम लपकि लपकि ॥ कछु कहि न सकत तिय बिरह अनल हिय उठत क्षणहिं क्षण तपकि तपकि। अति सकुचाति सखियन अधकारि अँखियन लगि अज लहरन टपकि टपकि ॥ २७॥

मदनहराछन्द ।

सखि लखि यदुराई छबि अधिकाई भाग भलाई जानि परै फल सुकृत फरै। अतिकांति सदन मुख होतहि सन्मुख दास हिये सुख भूरि भरै दुख दूरि करै ॥ छबि मोर पषनकी पीत बसनकी चारु भुजनकी चित्त अरै सुधि बुधि बिसरै। नव नील कलेवर सजल भुवन घर वर इंदीवर छबि निदरै मदमदन हरै॥ २८॥

लक्षण दोहा।

एकै तुक सोरह कलनि पाय कुलक गुरु अन्त।
चहुं तुक भागन यमकसो अलिला छन्द कहन्त ॥ २९ ॥

पायकुलक।

दृग आगे सोवतहु निकारों। हियते क्यों हरिरूप निकारों॥ हों निज तन समरतन विचारों। केहि उपाय कुलकानि सँभारों॥ ३० ॥

अलीलाछन्द।

भुव मटकावति नयन नचावति। सिंजित सिसकिन शोर मचावति॥ सुरतसमय बहुरंग रचावति। अलि लालनहित मोद सचावति॥ ३१ ॥

सिंहविलोकितछन्द दोहा।

चारि सगनकै द्विज चरण सिंह विलोकित येहु।
चरण अन्त अरु आदिके मुक्तमद ग्रस देहु॥ ३२॥

यथा।

मुनि आश्रम शोभ धरो तियहीं। अहि कच सँग बेशरि मोर जहीं॥ जहँ दास अहित मति सकल कटी। कर सिंह विलोकित गति करटी॥ ३३ ॥

लक्षण दोहा।

रोलामें लघु रुद्र पर काव्य कहावै छन्द।
तो आगे उल्लाल दै जानहु छप्पै छन्द॥ ३४॥

काव्यछन्द।

कहा बिन युवति युवति सुकहा बिन यौवन।

कह यौवन बिन धनहिं कहा धन बिन अरोग तन॥ तनसु कहा बिन गुणहिं कहा गुण ज्ञानहीन क्षन । ज्ञान कि विद्याहीन कहा विद्यासु काव्य बिन ॥ ३५ ॥

छप्पैछन्द ।

भालनयन मुख अधर चिबुक तिय तुव विलोकि अति । निर्मल चपल प्रसन्न रत्त शुभ वृत्ति थकी मति ॥ उपमा कह शशि खंज कंज बिंबिय गुलाब बर। खंडथान थिति प्राप्त पक्क प्रफुलित सुसोभवर॥ शारद किशोर शुभ गंध मृदु नवल दास आवत न चित। जु कलंकरहित युग सरल हित डार गहत षटपदसहित ॥ ३६ ॥

लक्षण ।

सिंहविलोकन रीति दे दोहापर रोलाहि।
कुण्डलिया उद्धत बरण तृजाति अमृत धुनि चाहि॥३७॥

कुण्डलियाछन्द ।

साईं सब संसारको संतत फिरत असंग । काम जारि कीन्हो भसम मृगनैनी अर्द्धङ्ग ॥ मृगनैनी अर्द्धङ्ग दास आसन मृगछाला। सुनिये दीनदयाल गरे नरशिरकी माला ॥ सुनिये दीनदयाल करो अजगुत सब ठाईं । कर्ण गहे कुण्डलिय विदित भयहरण गोसाईं ॥ ३८॥

अमृतध्वनिछन्द ।

धुनि धुनि शिर खल त्रिय गिरहि सुनत राम धनुशब्द । लग्गिय शर झरि गगन महि यथा भाद्रपद अब्द ॥ अब्द

निनद करि क्रुद्ध कुटिल अरि युक्ति मरत लरि। मुण्ड परत गिरि रुण्ड लड़त फिरि खड्ग पकारि कारि ॥ ऋच्छ प्रबल भट उद्धत मरकट मर्दत तिहि ध्वनि । निर्त्तत सुर मुनि मित्र कहत जय कृति अमृतध्वनि ॥ ३९ ॥

दोहा ।

पाया कुलक त्रिभंगियों होत मुक्तपद ग्रस्त ।
छन्द कहत हुल्लास है कारि तुक आठ समस्त ॥ ४० ॥

हुल्लासछन्द ।

कान्ह जन्मदिन सुर नर फूले । नभ घर निशि वासर सम तूले ॥ महिते महरि अबीर उड़ावैं । दिविते देवि सुमन वरषावैं ॥ सुमनन वरषावैं हरष बढ़ावैं तजि तजि आवैं याननको । साजि तिय नर भेषनिसहित अलेख निकरहिं अशेष निगाननिको ॥ तिन लोगानिकी गति दाननकी अति निरखि शचीपति भूलि रहै । व्रजशोभ प्रकासहि नन्द विलासहि दास हुलासहि कौन कहै ४१॥

इति श्रीदासविरचिते छन्दोर्णवे मात्राजातिछन्दवर्णनं नाम सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

दोहा ।

जाति छन्द प्राकृतनिके निपट अटपटे ढंग ।
दास कहै गाथादि दै तिनकी भिन्न तरंग ॥
विषमनि बारह कलश्समनि पन्द्रह ठारह बीश ।
सम पद तीजो गन यगन गाथा प्रकरण ईश ॥ १ ॥

लक्षण ।

समपद गाहू पन्द्रह पन्द्रह अठारह ठारह उग्गाहा ।
अट्ठारह पन्द्रह गाहा कहि पन्द्रह अगारह बिग्गाहा॥
बीसै बीस खंध कल बीसे अट्ठारह समपद सिंघिनी । स-
बके रबि कल विषम दल निसम अट्ठारह बीसै गाहिनी२

गाहूछन्द ।

शिव सुर मुनि चतुरानन जाको लहै नहीं थाहू ।
पारवार कोउ जानन हरिनामसमुद्र अवगाहू ॥ ३ ॥

उग्गाहा ।

शिव मुनि सुर चतुरानन जाको कबहूं नहीं लहै थाहा ।
पारवार कोउ जानन हरिनामसमुद्र अवगाहा ॥ ४ ॥

गाहाबिग्गाहा अर्थमें जाति ।

बारह लहुआ विप्री वाईसा क्षत्रिनी गाहो ।
बत्तीसासो बैसी बाकी लहु है शुद्रिनी बिगाहो ॥ ५ ॥

खंधाछन्द जगनफल ।

एक जगन कुलवंती दोइ जगन्न गिहिनी सुहै सुनि वंधो।
जगनविहीनी रंडा वेश्या गावो वह जगन्नको खंधो ॥६॥

गाहिनी तथा सिंहिनी ।

सुनि सुन्दरि मृगनैनी तू प्रभा समुद्र अवगाहिनी राजै ।
हंसगमनि पिकबैनी तो लंक विलोकि सिंहिनी लाजै ७॥

उलटि पढे गाहिनी चपलागाथा ।

चपला गाथा जानो यह दोइ जगन्नु है समे पाया ।
पिंगलनाग बखानो गुरु दोइ तुकंतमें ठाया ॥ ८ ॥

दोहा ।

ताहि जघनचपला कहैं दल दूसरे ज दोइ ।
प्रथम दलहिमें जगनु द्वै मुखचपला है सोइ ॥ ९ ॥

विपुलगाथा ।

प्रथम पाय कल तेरहै सत्रहै मत्त है बियनाथा ।
तिसरे पय ग्यारहै चौथे सोरहै विपुला गाथा ॥ १० ॥

रसिकछन्द दोहा ।

ग्यारह ग्यारह कलनिको षटपद रसिक बखानि ।
सब लघु पहिलो भेद है गुरु दै बहु विधि ठानि ॥ ११ ॥

यथा ।

हँसत चखत दधि मुदित । झुकत भजत मुख रुदित ॥
त्रसित तियनि मिलि रहत । रिसयुत विरतिहि गहत ॥
अगणित छबि मुख ससिक । शिशु तब नवरस रसिक ॥ १२ ॥

खंजाछन्द दोहा ।

सात पंच लघु जगन गो मत्ता यकतालीस ।
योंहीं करिं दल दूसरो खंजा रच्यो फणीश ॥ १३ ॥

यथा ।

सुमुखि तु अनैन लखि दह गह्यो झखनि झख गरल मिसि भवर निशि गिलत नितहि कंज है । निशि निमित्त ज्यों सुरतियनि मृग फिरत बनहिं बनहु अहरु अमदन सर थिर न रहत खंज है ॥ १४ ॥

दोहा ।

खंजाके दल अर्द्धपर द्वै गुरु दे सुककन्द ।
आगे गाहा अर्द्ध करि जानहिं मालाछन्द ॥ १५ ॥

मालाछन्द ।

लगत निरखत ललित सकल तन श्रम कलित ब्रजअ-
धिप अंग वलित सुरतिशय सोहती बाला । मरकत तरु
जनु लबढी फलि कनकलता मुकुटमाला ॥ १६ ॥

शिष्याछन्द दोहा ।

पहिले दलमें चौबिसै लघुपर जगनहिं देहु ।
पुनि बत्तिस पर जगनु दै शिष्यागति सिखि लेहु ॥ १७ ॥

यथा ।

शुभरदनि विधुवदनि गुणसदनि जगहदनि नाहिं तोहिं
सरिष्यु । कुंवरि सम विनय श्रवण सुनि समुझि पुनि म-
नहिं गुनिन प्रिय प्रति रिस कुमति शिष्यु ॥ १८ ॥

चूडामणिछन्द ।

दोहा गाहाको करो मुक्तापद अस बन्द ।
नागराजपिंगल कह्यो सो चूडामणि छन्द ॥ १९ ॥

यथा ।

दिनहींमें दिनकर दिपै निशिहीमें शशिज्योति । जगद-
म्बा द्युति दिवस निशि जगमग जगमग होति ॥ जगमग
जगमग होती होरी ज्यों गोरी चिनगारै । चक्रवर्ति चूडा-
मणि जाके पग भूतल हाजारै ॥ २० ॥

अथ रण्डाछन्द ।

प्रथम तीय पंचम चरण पाहिले जानि अखेद ।
दूजो चौथे फेरि गुनि जानहिं रण्डाभेद ॥ २१ ॥

यथा ।

तेरह ग्यारह करभी वरनि नन्दभुवन हर ढरनिबो न इस रुद्र नोहनी अरनि । चारुसेन तिथि हरनि तिथि रबि मत्ता भद्रावरनि ॥ २२ ॥

दोहा ।

तिथि रवि तिथि हर तिथि पयनि राजसे निरड्डाहि ।
तालंकिनि तिथि कल अधिक दोहा सब तलचाहि॥२३॥

तालंकिनिरड्डा यथा ।

बालापन बीत्यो बहु खेलनि । युवा गई तियकेलनि ॥ रह्यो भूलि पुनि सुतबितरेलनि । जिय गल डारी तेरे जेलनि ॥ अजहुं समुझि तजि मूरुख पेलनि । काल पहूंच्यो शीशपर नाहिन कोऊ अड्ड । तजि सब माया मोह मद रामचरण भजु रड्ड ॥ २४ ॥

दोहा ।

पांच चरण रचना उपर दीजे दोहा अंत ।
सात भेद अहिपति कह्यो नवपद रड्डातंत ॥ २५ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राके जातिछन्दवर्णनं नाम अष्टमस्तरंगः ॥८॥

अथ मात्रादण्डकवर्णन दोहा ।

छब्बिससो बढि वर्ण जो दण्डक वर्ण विशेषि ।
बत्तिसते बढि मत्त जो मत्ता दण्डक लेखि ॥ १ ॥

झूलनाछन्द दोहा ।

दश दश दश मुनि जति चरण छन्द झूलना तत्त ।
दुकवलि रहु स्वौसैतिसो वन्तालीसौ मत्त ॥ २॥

यथा ।

पानि पीवै नहीं पान छीवै नहीं वाम अरु वसन राखै न नेरो। प्रानके ऐनमें नैनने ह्वै रह्यो रूप गुण नाम तेरो॥ विरहबश ऐसेही है वैहीके मही राखि है कै नहीं प्राण मेरो। तोहिं तकियाहि संदेहके मूलना झूलतो चित्त गोपालकेरो॥ ३ ॥

दीपमाला दोहा ।

दीपकको चौगुन किये दीपमाल सुखदानि ।
चालिस कल शिर द्वै घटै अन्त बढ़े विजयानि ॥ ४ ॥

दीपमाला यथा ।

लहिकै कुहु यामिनी मत्त गजगामिनी चली वन मिलनको नन्दलालाहि । कै सुघर मन्मत्थ रचि स्वर्नकी वेलि लै चल्यो गहि सहित शृंगार थालाहि॥ संग सखी परवीण अति प्रेमसो लीन मनि आभरण ज्योति छबि होति बालाहि । कै दासके ईश ढिग जाति लीन्हे जली भामिनी भाग्यसों दीपमालाहि ॥ ५ ॥

विजया ।

शित कमलवंशसी शीतकर अंशसी विमल विधि हंससी हीरवरहारसी । सत्य गुण सत्यसी संतरसवंश-

सी ज्ञान गौरत्वसी सिद्धि विस्तारसी ॥ कुन्दसी कास-
सी भारतीवाससी सुरतरु निहारसी सुधारससारसी ।
गंगजलधारसी रजतके तारसी कीर्त्ति तव विजयकी
शंभुआगारसी ॥ ६ ॥

दोहा ।

तीनि तीनि बारह विरति दश जति दै तुक ठानि ।
छन्द छियालिस मत्तको चंचरीक पहिंचानि ॥ ७ ॥

चंचरीछन्द ।

जाको नहिं आदि अंत जननि जनक देव कंत रूप
रंग रेखरहित व्यापक जगजोई । मच्छ कच्छ कोल
रूप वामन नरहरि अनूप परशुराम राम कृष्ण बुद्ध
कूकि सोई ॥ मधुरिपु माधव मुरारि करुणामय कैट-
भारि रामादिक नाम जासु जाहिर बहुतेरो । कोमल
शुभ वास मंजु सुखमा सुखशील गंज ताको पदकंज
चित्त चंचरीक मेरो ॥ ८ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे मात्राछन्दके वृत्तिजातिमुक्तकदण्डक-
वर्णनं नाम नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

अथ वर्णवृत्तिमें वर्णप्रस्तारभेद ।

एक वर्णको उक्ता प्रकरण तासु भेद द्वै कीजै
पाठ। द्वै अत्युक्ता भेद चारि हैं मध्या तीनि भेद हैं
आठ ॥ चारि प्रतिष्ठा सोरह विधि पाँचै सुप्रतिष्ठा भेद
बतीस । षट्गायत्री चौंसठि सातै उष्णिक सौपर

अट्ठाईस ॥ आठै वर्ण अनुष्टुप् द्वै सै छप्पन भेद कहत फणिराउ । गनौ अक्षरको बृहती प्रकरण भेद पांच-सौ बारह ठाउ ॥ दशै वर्णको पंगति प्रकरण भेद सहस ऊपर चौवीस । ग्यारहको त्रिष्टुप प्रकरण गनि द्वै हजार अरु अडतालीस ॥ बारहकी जगती प्रकरण तेहि भेद हजार चारि छानवे । तेरह अक्षरको अति जगती इक्यासी सत्तपर बानवे ॥ चौदहको शक्करी सोरहै सहस तीनि चौरासीय । पंद्रह अतिशक्करी सहस बत्तीस सुसातसै अरसठ कीय ॥ सोरह अष्टि सहसपै सठिशत पांच छत्तीस अधिक लै धरी । सत्र-हको अत्यष्टि लाखपर यकतिस सहस बहत्तरि करी ॥ अट्ठारह धृति छब्बिस ऐतु इकीससै ऊपर चावालीस । बावन ऐतु बयालिससै अट्ठासी बिधि अतिधृति वन-ईस बीस ॥ वरणको कृति प्रकरण है तासु भेद गनि ले दश लाखु । अढ़तालीस सहस्र पांचसै और छिहत्ति-रि ऊपर राखु ॥ यकइस वरण प्रकृति प्रकरण है वीस लाख पहिले सुनि मित्त । सत्तानवे सहस्र एकसै बावन ऊपर दीजै चित्त ॥ छन्द होय बाईस वर्णको अति-कृति प्रकरण जानि अखेद । यकतालीस लाख चौरा-नवे सहस तीनिसै चारै भेद ॥ छन्द कहावै विकृति प्रकरण तेइस वर्ण होहिं जेहि माह । लाख तिरासी सहस अठासी छासै आठ गनै अहिनाह ॥ संस्कृति नाम

वरण चौविसको तासु भेद है एक करोरि । सतस-
ठि लाख हजार सतहत्तरि दुइसै ऊपर सोरह जोरि॥
अतिकृति प्रकरण वरण पचीसै तीनि करोरि लाख
पैंतीस । चौवन सहस चारिसै बत्तिस भेद विचारि
कहत फणिईश ॥ उत्कृति होत बरण छब्बिसको भेद
छ कोटि यकहत्तरि लक्ष । आठ हजार आठसै चौ-
सठि क्रमत दुगुण बढै परितक्ष ॥ तेरह क्रोरि बया-
लिस लक्षो सत्रह सहस सातसै होय। छब्बिस अधि-
क जोरि सब भेदन ठीक दियो चाहै जो कोय॥ १ ॥

दोहा।

सबके कहत उदाहरण बाढ़ै ग्रंथ अपार ।
कहूं कहूं ताते कहत वरण छन्द विस्तार॥ २॥

लक्षण दोहा।

एक गुरु श्री छन्द है कामा द्वै गुरु बन्द।
ध्वजा एक महि नन्द यक सारस पिय मधुछन्द॥
तीनि वरण प्रस्तार जो म य र स त ज भ न पाठ।
आठौ गणते दास भनि छन्द होत हैं आठ ॥ ३॥
ताली ससी प्रिया रमनि अरु पंचाल नरिंद ।
आठ सहित मन्दर कमल म य र स त ज भ न छन्द॥४॥

चार वर्णके छन्द सोरठा।

तिर्ना क्रीडा नन्द रामा धरा नगन्निका।
कला तराणिजा छंद गनि गोपाल मुद्राहि पुनि ॥ ५॥

धारी वीरो कृष्ण बुद्धी निशि हारि सोरहो ।
भेद कहत कवि जिष्ण चारि वरण प्रस्तारके ॥ ६ ॥

दोहा ।

मत्तपथारहुमें परैं उदाहरण ये आइ ।
तिर्ना क्रीडा नन्द अरु धरा गोपालसे वाइ ॥ ७ ॥

तिर्नाछन्द ।

धर्मज्ञाता, निर्भयदाता । तृष्णाहिन्नो, जीवै तिन्नो ॥ ८ ॥

कीडाछन्द ।

हमारी सो, हरै पीडा । कलिंदी जो, करै क्रीडा ॥ ९ ॥

नन्दछन्द ।

यो न कीजै, जान दीजै । हो कन्हाई, नंद आई ॥ १० ॥

धराछन्द ।

सो धन्य है, औ गन्य है । सीतावरै, जो ही धरै ॥ ११ ॥

दोहा ।

यकइस गण बाहुल्यते छन्द होत बहु भांति ।
दास देखावै भिन्न करि तेहि तरंगकी पांति ॥ १२ ॥

लक्षण ।

या रस तज भगननि दुनो भरु । छहो छन्दके नाम समुझि धरु ॥ शंखनारि जोहा तिलका करि । मंथानो मालती दुमंदरि ॥ १३ ॥

शंखनारी छन्द ।

लखे शुभ्र ग्रीवा, महाशोभसीवा । परेवा कहारी, कहा शंखनारी ॥ १४ ॥

जोहा छन्द।

रूपको गर्व छै, भूलती खर्बवै।
सुख्यनौ साथमें, लाल जो हाथमें॥ १५॥

तिलका छन्द।

अधिको मुख हो, किय क्यों शशिसो।
साजिकै सखियो, तिल काजरसों॥ १६॥

मंथान छन्द।

गोविन्दको ध्यानु, सारंस तु जानु।
विद्यामहीमानु, है ज्ञान मंथानु॥ १७॥

मालती छन्द।

लखो बलिबाल, महा छबिजाल।
लसै उर लाल, सुमालतिमाल॥ १८॥

दुमंदर छन्द।

बालपयोधर, मो हिय सोहर।
मानुसुअंदर, मानु दुमन्दर॥ १९॥

लक्षण दोहा।

तीनि नन्द ग समानिका चामर सात अनूप।
पांच नन्द गो सैनिका धुजल सेनिकारूप॥२०॥

समानका छन्द।

देवद्वार जाहि तू। बोलि पाहि पाहि तू॥
राखि है कृपानिकै। खास दास मानिकै॥ २१॥

चामर छन्द।

बालके सुदेश केश कालिंदी प्रभा दली। पन्नगी कुमारकी

सेवारकी कहांचली ॥ या व्यथा फिरै निकुंज कुंज पुंज भामरो । कामधेनु पायरो रहै अतेय चामरो ॥ २२ ॥

सेनिका छन्द ।

चली प्रसून लेन वृन्दबाल । सुमंजु गीत गावतीं रसाल ॥ विलोकिये प्रभा अनूप लाल । बनी स्वरूप सेनिका विशाल ॥ २३ ॥

लक्षण दोहा ।

चारि मल्लिका चंचला आठ गन्द दश नन्द ।
प्रमाणिका धुज चारिको आठ नराच सुछन्द ॥ २४ ॥

मल्लिका छन्द ।

चित्त चोरि लेत पौन । मन्द मन्द ठानि गौन ॥
मोहनी विचित्र पास । मल्लिका प्रसून बास ॥ २५ ॥

चंचला छन्द ।

श्याम श्याम मेघ ओघ व्योममें अलील सैन । ल्याइयो प्रसून बाण कालकी अपार सैन ॥ होति आजु काल्हिमें बियोगिनि न प्राणहानि । चंचला न चैन मीचु नाचती चहूं दिशानि ॥ २६ ॥

गंड तथा चित्र छन्द ।

रामरोष जानि हार लाभ मानि शम्भू जो नचै उताल । पाइकै मृदंग शोर आवई कुमारको मयूर हाल ॥ होइ तो कुतूहलै विलोकि शुंडको चलै डेराइ व्याल । चौंकि चिग्घरे गणेश गुंजि गंडते उडै मलिन्द जाल ॥ २७ ॥

प्रमाणिका यथा ।

न है समय घटानिकी । सलाह मान ठानिकी ॥
जताइ जाइ दामिनी । सुक्षिप्र मानि कामिनी ॥ २८ ॥

नराच छन्द ।

मृगाक्षि एक द्वारते सुभावही चितै गई । कह्यो न जाइ मोहिये अगाइ धाइकै गई ॥ परयो प्रतीति आजु मोहिं दास बैन सांचु है । खरो नराचते तिया कटाक्षको नराचु है ॥ २९ ॥

लक्षण ।

भुजंगप्रयात लक्ष्मीधर नाम । सतोटक सारँग मोतियदाम ॥ समोदक दास छ भेद विचारि । परोसत जो भन चौगुण धारि ॥ ३० ॥

भुजंगप्रयात ।

छटे बार देखे धरे मोर पाखे । विना डीठिकी ह्वै गई वृन्द आखे ॥ जिते सर्व श्रृंगार वेणीप्रभासों । भुजंगो प्रयातो त्रपा पाइ जासों ॥ ३१ ॥

लक्ष्मीधर यथा ।

शंख चक्रो गदा पद्म जा हाथमें । पक्षिराजा चढयो वैष्णो साथमें ॥ दाससो देव ध्यावै सदा जीयमें । जो रहै चारु लक्ष्मी धरे हीयमें ॥ ३२ ॥

तोटक छन्द ।

घरहा इनगैरबगारनु दे । हरिरूप सुधा उर धारन दे ॥

तलफै अँखिया न कि टारन दे । अब तो टक लाइ निहारन दे ॥ ३३ ॥

सारंग छन्द ।

कीजै कुहू जानि क्यों शशिको भंग । बेगै चलो श्यामपै साजिया ढंग ॥ कस्तूरिही लेपकै लेहि सवँग । प्यारि सजै आजु सारी निसारंग ॥ ३४ ॥

मोतीदामछन्द ।

तमलके ऊपर है बकपांति । कि नीलशिलापर संतजमाति ॥ नक्षत्रनि अंक लिये घनश्याम । कि श्याम हिये पर मोतियदाम ॥ ३५ ॥

मोदक छन्द ।

नारि उरोजवती निकुरो जनि । कान्ह उचाट भरे जिउरो जनि ॥ लीबे है कूबरीको चरणोदक । कूबर जासु बसी कर मोदक ॥ ३६ ॥

लक्षण दोहा ।

अन्त भुजंग प्रयातके लघु इक दीन्हे कन्द ।
तीनि भगन द्वै गुरु दिये बन्धु दोधको छन्द ॥ ३७ ॥
मौदक शिरकै बंधु शिर द्वौ लघु तारकबन्द ।
पंच सगन भ्रमरावली छय गण क्रीडाछन्द ॥ ३८ ॥
पंच भगन गुर एकको छन्द कहावै नील ।
तीनि सगन शिर करण है मोटनक सुशील ॥ ३९ ॥

कंद छन्द ।

चहूं ओर फैलाइ है चन्द्रिका चंद । खुलैगी सुगंधै

फूलैंगी लतावृंद ॥ जगत्प्राण त्यों डोलि हैं मन्दही मंद । कभै चेतु ऐहै चिदानन्दको कन्द ॥ ४० ॥

बंधु छन्द ।

आरतते अति आरत है जू । आरतवन्त पुकारत हैजू ॥ दासहूको दुख दूरि बहायो । तौ प्रभु आरतबंधु कहायो ॥ ४१ ॥

तारक छन्द ।

पर्य्यंक मयक मूखी चलि ऐहै । सविलास विलोकि हिये लगि जैहै ॥ विरहागि भरो हियरो सिय रैहै । करतार कबै वह वासर ऐहै ॥ ४२ ॥

तजिकै दुख गंज हजार कजारक । कत सोवत भूमि भटारकटारक ॥ भजि ले प्रहलाद उबारक बारक । जगको निस्तारक तारक तारक ॥ ४३ ॥

भ्रमरावली छन्द ।

चलि बीस बिस्वे उहि आजुहि ल्यावत हौं । तुम्हरे हियकी सब ताप बुझावत हौं ॥ इन कीर चकोरन दूरि करौ बनते । भ्रमरावलि बेगि बिडारहु कुंजनते ॥४४॥

क्रीडा छन्द ।

दुहूं ओर बैठी सभा शुभ्र सोहै सुमानो किनारा । रही दूरिलौं फैलि है चांदनी चारु ज्यों गंगधारा ॥ सजे चूनरी नील नच्चंति चंद्राननी बारदारा । करै चन्द्र क्रीडा मनो संग लै सर्वरी सर्व तारा ॥ ४५ ॥

नीलछन्द ।

मोहनआननकी मुसुकानि अनूप सुधा । होत विलोकी हजार मनोभवरूप मुधा ॥ पीत परापर दास न्योछावरि बीजु छटा॥नील कलेवर ऊपर कोटिक नील घटा॥४६॥

मोटन छन्द ।

मोहै मनु बेणु बजाइ अली । मुसै उर अन्तर भांति भली ॥ कीजै किन ब्योत अगोटनको । है चोर यही मन मोटनको ॥ ४७ ॥

दोहा ।

भुजँगप्रयातहि आदि दै सब चौगुनो बनाउ ।
होत परम सुखदानि है भाषो भोगीराउ ॥ ४८ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे बेगनबाहुल्यके छन्दवर्णनं नाम दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

अथ वर्णसवैयाप्रकरण दोहा ।

यकइसते छब्बीस लगि बरण सवैया साजु ।
इक इक गण बाहुल्य करि वरण्यो पन्नगराजु ॥ १ ॥

लक्षण ।

सात भ है मदिरा गुर अन्तहु दै लघु और चकोर कहो गुनि । ताहु गुरू करि मत्त मयंद लहू मदिरा शिर मानिनि ये सुनि ॥ आठ करो य भुजंग र लक्षिय सो दुमिला तहि आभार है पुनि । जाहि सुमोतियदाम बनावहु भागन आठ किरीट रचो चुनि ॥ २ ॥

मदिरा छन्द ।

दीन अधीन ह्वै पायँ परी हो अरी उपकारको घावहि तू ॥ मेरी दया लखि होहि प्रसन्न दया उर अन्तर ल्यावहि तू । नैननके हियकी बिरहागिनि एकहि बार बुझावहि तू । श्रीमनमोहनरूप सुधा मदिरामद मोहिं छकावहि तू ॥ ३ ॥

युक्त दूसरी मदिरा चकोरछन्द ।

सोहत है तुलसी बनमें रमि रास मनोहर नन्दकिशोर । चारिहू पास हैं गोपवधू मणिदास हियेमें हुलासन थोर ॥ कवल उरोजवती नको आनन मोहन नैन भ्रमै जिमि भोर । मोहन आनन चन्द लखे बनि तानके लोचन चारु चकोर ॥ ४ ॥

मत्तगयन्द छन्द ।

सुन्दरि शुभ्र सुवेष सुकेश सुश्रोण सुठौनि सुदंत सुसैनी। तूंगतनी मृदु अंग कृशोदरी चन्द्रमुखी मृगशावकनैनी ॥ सोनेको बास रु दास मिले गुन गौरि प्रिया नवला सुखदैनी । पीन नितम्बवती करभोरुह मत्तगयन्दगती पिकबैनी ॥ ५ ॥

मानिनी यथा ।

प्रफुल्लित दास बसंत कि फौज शिलीमुखभीर देखावतिहैं। जमाति प्रभंजनकी गहि पत्रनि मानविभंजन धावति हैं॥ नये दल देखि हथ्यारन डारि भटै तियसंगति भावति हैं।

चढाइकै भौंह कमानिनि मानिनि काहे तू बैर बढ़ावति है॥६॥

भुजंग छन्द।

तुम्हैं देखिवेकी महाचाह बाढ़ी मिलापै बिचारै सराहै स्मरै जू। रहै बैठि न्यारो घटा देखि कारी बिहारी बिहारी बिहारी रै जू॥ भई काल बौरी फिरै आजु बैठी दशा ईश काधों करै जू। बिथामें गसीसी भुजंगै डसीसी छरीसी भरीसी घरीसी भरै जू॥७॥

लक्षी छन्द।

बादिही आइकै बीरमो ऐनमें बैनके घावकी वो करै थावरी। आपनी तत्त्व हो एकही वा कह्यो कौनकी वो करै बात फैलावरी॥ दास हो कान्ह दासी बिना मोलकी छांडि दीन्ह्यो सबै वंश बन्शावरी। ज्ञान शिक्षानि तासो जुदी रक्षिये लक्षिये जाहि प्रत्यक्षही बावरी॥८॥

दुमिला छन्द।

सखि तोमहँ याचन आई हौं मैं उपकारकै मोहिं जिआवहि तू। तोहिं तातकी सौ निज भ्रातकि सौं यह बात न काहू जनावहि तू॥ तुव चेरी हौं होउँगी दास सदा ठकुरायन मेरी कहावहि तू। करि फन्द कछू मोहिं या रजनी सजनी बृजचन्द मिलावहि तू॥९॥

आभारछन्द।

ये गेहके लोग धौं कार्तिकी न्हानको ठानि हैं कालिह एक कही गौन। सम्वादकै बादिही बावरी होयको आ-

जु आली रहौ ठानेही मौन ॥ हौं जानती हौं न धौं सीख कौने दयो नन्दको लाल गोपाल धौं कौन । आभार रह्यां द्वारको ताहिको सौंपिके मोहिं औ तोहिं ह्यां राखते भौन ॥ १० ॥

मुक्तहराछन्द ।

पठावत धेनु दुहावन मोहिं न जाउँ तौ देखि करौ तुम टेहु । छुटाइ भज्यो बछरा यह वैरी मरू करि हौं गहि ल्याई हौं गेहु ॥ गई थकि दौरत दौरत दास खरोट लगे भइ विह्वल देहु । चुरी गइ चूरि भरी भइ धूरि पर्‍यो टुटि मुक्तहरा यह लेहु ॥ ११ ॥

किरीट छन्द ।

पायँ न पीरिये पावरिया कटि केशरिया दुपटा छवि छाजित । गुंज मिले गजमोतिय हारमें रीति सितासित भांति है भाजित ॥ अंग अपार प्रभा अवलोकत होत हजार मनोभव लाजित । बाल यशोमति लाल यई जिनके शिर मोर किरीट विराजित ॥ १२ ॥

लक्षण दोहा ।

आठ सगन गुर माधवी सुपिय मालती चाहि ।
सत्य नयों मंजरि कहे सत्य भरो अलसाहि ॥ १३ ॥

माधवी यथा ।

विन पंडित ग्रन्थ प्रकाश नहीं बिन ग्रन्थ न पावत खण्डित भा है । जग चन्द्र विना न विराजति यामिनि

यामिनिहू विन चन्द्र अभा है॥सुसभाहिके देखे ते साधुता होति औ साधहीते शुभ होति सभा है। छबि पावत है मधुमाधवीते मधुको अतिमाधवीहूसों प्रभा है॥ १४॥
महिमा गुणवंतकी दास बढ़ै बकसै जब रीझिकै दान जवाहिर। गुणवंतहुते पुनि दानिहूंको यश फैलत जात दिगंतके बाहिर॥ जिमि मालतीसों अतिनेह निबाहेते भोर भयो रसिकाईमें जाहिर। अरु भौरहुको अति आदर कीन्हे सुवासमें मालति यों भइ माहिर॥ १५॥

मंजरी यथा।

वसंतसे आजु बने ब्रजराज सपल्लव लाल छरी बर हाथे। सुकुण्डलके मुक्ता बिच है मकरन्दकि बूंदनकी छबि नाथे॥ मलिन्द बने कच घूंघरवारे प्रसून घने पहुंचीनमें गाथे। गरे जिमि किंशुक गुंजकी माल रसालकी मंजुल मंजिर माथे॥ १६॥

अरसात छन्द।

सात घरिहूं नहीं बिलगात लजात औ बात गुने मुसुकात हैं। तेरी सौं खात हौं लोचन रात है सारस पातहूते सरसात हैं॥ राधिका माधो उठे परभात है नयन अघात हैं पेखि प्रभात हैं। लागि गरे अंगि रात जँभात भरे रस गात खरे अरसात हैं॥ १७॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे सवैयाप्रकरणवर्णनं नाम एकादशस्तरंगः॥ ११॥

अथ संस्कृतयोग्यपद्यवर्णनं दोहा।

कहौं संस्कृत योग्य लखि पद्यरीति सुखकन्द।
गनलक्षण गननाममें छन्दलक्षणें छन्द ॥ १ ॥

रुक्मवती छन्द ।

रग्गनो कर्नो सगनोगो । जानिये सो रुक्मवती हो ॥
पायमैं नौ अक्षर सोहै । तीनि औ छामें जति जोहै ॥ २ ॥

यथा ।

लक्ष्मी कांपै नर रई है। राख ते सो जात भई है ॥
सो रही ना एक रती जू। लंकही जो रुक्मवती जू ॥ ३ ॥

शालिनी छन्द ।

कर्नो कर्नो रग्गनो रग्गनो गो । जानो याको छन्द है शालिनी हो ॥ पाये पाये वर्ण एकादशो है । चारै सातै बीच विश्राम सोहै ॥ ४ ॥

यथा ।

बाला वेणी अद्भुतै व्यालिनी है । माधो नीके गर्वकी घालिनी है ॥ पीके जीमें प्रेमकी पालिनी है । सौते केही सर्वदा सालिनी है ॥ ५ ॥

वातोर्मी छन्द ।

गोगी कर्नो सगनो जगंनो । बातोर्मी है यहई छन्द बनों॥ सातें चोथे जति है चारु जामें । पाये बनों दश औ एक तामें ॥ ६ ॥

यथा ।

कैसे याको कहिये नेकु नाहीं । नीवी बांधी रहती याहि

माहीं ॥ ताते ऐसो वरणै बुद्धि मेरी । वातोर्मी है सजनी लंक तेरी ॥ ७॥

इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा छन्द ।

तक्कार कर्नो सगनो यगंनो । है इन्द्रवज्रा दश एक बंनो ॥ उपेन्द्रवज्रा जगनादि सोई । दुहू मिले पै उपजाति होई ॥ ८ ॥

इंद्रवज्रा यथा ।

एरी बडी जो गिरिते कहायो । सो चित्त पीको इनसों गिरायो ॥ सो है अयानो मृदु जो कहै री । है इन्द्रवज्रा मुसुकानि तेरी ॥ ९ ॥

उपेन्द्रवजा आदिको लघु पढे होत है ॥ १० ॥

उपजाति कोई तुक आदि लघु पढें ॥ ११ ॥

उपस्थित छन्द ।

कर्नो सगंनो पियगो पगंनो । सोपस्थितो है दश एक बंनो । जगन्नु सगनो तक्कारु करना । पयस्थित कहै मन ह्वै प्रसन्ना ॥ १२ ॥

यथा ।

प्यारे प्रतिमान कहा करौं मैं । जो आपन आपनोई न रोमैं ॥ आली दृढ़ई बहुते कियेहू । कोपास्थितिही सुरै रहै न केहू ॥ १३ ॥

पैस्थित छन्द ।

दुखो रु सुखको है दानि सोई । वहै हरत दूजो न कोई ॥ न दास जीमें हूजे निरासी । जो पयस्थित है वैकुंठवासी॥

सालीछन्द।

नन्द करनो नन्दगो रगानोगो। नाम याको छन्द साली कहो हो ॥ चारि सातै दास विश्राम ठानो। अख्यराये ग्यारहो जोरि आनो ॥ १५ ॥

यथा।

कान्ह कीजो त्यों रती खीस होगी। मोहिं त्योहीं धन्य आली कहोगी ॥ शूर कैसे जोर जानै जियेमें। होइ जाके शेलसाली हियेमें ॥ १६ ॥

सुन्दरी छन्द।

नगनभा गनु भागनु रग्गना। चरण चारिहु सुंदरि शोभना ॥ द्रुतविलम्बित याहि कोऊ कहै। वरण बारह दास अचूक है ॥ १७ ॥

यथा।

अनमनी सजनी सब संगकी। सुधि न तोहिं रही कछु अंगकी। दुखित मोहनलाल मुकुंदरी। कुढ़ग मानहि भानहि सुंदरी ॥ १८ ॥

प्रमिताक्षरा।

प्रिय नंदनंद सगनो सगनो। प्रमिताक्षराहि पगनो पगनो ॥ जति बीच बीच भनिले भनिले। दश दोइ वर्ण गनिले गनिले ॥ १९ ॥

यथा।

अँगिया सगाढ़ बल दे जियकी। अरु नील अंचलहुसो

मढि ली ॥ तिन बीच व्यक्त झलकै कुच यों । कबितानि-बद्ध प्रमिताक्षर ज्यों ॥ २० ॥

वंशस्थविल छन्द ।

जगन्नु कर्नो सगनो लगो लगो । सुछन्द वंशस्थ बि-लोप गोपगो ॥ गोआदिको वर्ण सुइन्द्रवंशु है । मिलैं दुधापै उपजाति अंशु है ॥ २१ ॥

यथा ।

सक्यो तपस्वी महिमैं न होइ जू । न तो हमारे थलु लेइ सोइ जू ॥ नटी न वंशस्थ विलोकि सोहनी । कृतेन्द्रवंशो-परि विश्वमोहनी ॥ २२ ॥

इन्द्रवंशा यथा ।

जान्यो तपस्वी महिमैं न होय जू । न तो हमारो थलु लेइ सोइ जू ॥ नारी न वंशस्थ विलोकि सोहनी । की इन्द्रवं-शोपरि विश्वमोहनी ॥ २३ ॥

विश्वादेवी छंद ।

गोगोमो रूपो गो यगानै यगानै । विश्वादेवीके पायँमें चित्त आनै ॥ सोहै आभैं बारहो वर्ण जाके । वर्णों हैं पांचों सात विश्राम ताके ॥ २४ ॥

यथा ।

सेऐं गौरीके पायँमेंकी ललाई । योगीको होती योगरा-गाधिकाई ॥ राजस्सो पावै शूर जे होत सेवी । सोहागै लेगी सेइकै विश्वदेवी ॥ २५ ॥

प्रभा छंद।

दुजवर पिय रागिनी रागिनी। करत विमल चारु मंदा-किनी॥ बहुत कहत है एही है प्रभा। दु दश वरण और धा है अभा॥ २६॥

यथा।

शिवशिरपर तो ढरी गंग री। तियकुच शिवपै त्रिवेणी ढरी॥ सुरसति यमुना मनी भामिनी। मुकुटगतप्रभासु मन्दाकिनी॥ २७॥

मणिमालाछंद।

कर्ना पिय कर्ना कर्ना पिय कर्ना। आधे विश्रामो है बारह बर्ना॥ बीसै जहँ मत्ता सोहै अति आला। भोगीपति भाषो याको मणिमाला॥ २८॥

यथा।

चन्द्रावलि गौरी पूजन लै जाती। कीजै कि न प्यारे सीरी अब छाती॥ राधा वह आवै एहो नँदलाला। जाके हिय सोहै नीकी मणिमाला॥ २९॥

पुटछन्द।

तिय दुजबर कर्नौ नन्द कर्नौ। जति बसु अरु चारै बीस बर्नौ॥ दश अरु बिय यामें वर्ण राख्यो। अहिपति पुट-नामे छन्द भाख्यो॥ ३०॥

यथा।

नहिं बृजपदि बातैं तू सुनावै। सखि मरतसमयमें मोहिं

ज्यावै ॥ अमिय श्रवत आली आस्य तेरो । श्रवणपुट न पीवै प्राण मेरो ॥ ३१ ॥

ललिता छन्द ।

तो अग्र गैल पिय नन्द नन्द गो । विश्राम लेत पग पंच सत्तको ॥ हे मुग्ध दौ रु दश वर्ण देहि री । सानन्द जानि ललिताहि लेहि री ॥ ३२ ॥

यथा ।

वशी चोराइसु यकन्तमें गई । कान्है बताइ इन कानमें दई ॥ जैसी विचित्र वृषभानलाड़िली । तैसी प्रवीन ललिता सखी मिली ॥ ३३ ॥

हरीमुखछन्द ।

दुज वर नन्द जगंनु नन्द कनौं । हरिमुख छन्द भुजंग-राज वनौं ॥ दश अरु तीनि वरंनु चारु सोहै । षट अरु सात विराम चित्त मोहै ॥ ३४ ॥

यथा ।

बंधहि न जे मृदु हास पास माहीं । बिधतहि ये दृगबाण जासु नाहीं ॥ धनि धनि ते पमंदा सदा कहावै । हरिमुख हेरिजु फेरि चेतु ल्यावै ॥ ३५ ॥

प्रहार्षिणी ।

मैं जानो दुजवर रग्गनो यहै जू । याहीको प्रहार्षिणी सबै कहै जू ॥ तीनै अरु विरति विचारि पांच पांचो । तीनै अरु दश अखरानि ठीक यांचो ॥ ३६ ॥

यथा।

पायो तूरि सकारि कौन सुख राधे। चोरी वैरीसन कौन वैर साधे॥ तेरी तनु आँखियन अश्रु वर्षिणी है। सौतिनकी जनिउ महाप्रहर्षिणी है॥ ३७॥

तनुरुचिरा छन्द।

लगे लगे दुजवर गैलगो। भले अली तन रुचि फवै लगो॥ त्रयोदश वर्णनिसो प्रभावनी। विराम है लखि नव चारिको धनी॥ ३८॥

यथा।

अनेक धामन थवारि डारिये। किती प्रभा मर्कतमें विचारिये॥ कहां चलै जलधर ज्योतिमन्दकी। सकै जु ह्वै तनरुचि रामचन्द्रकी॥ ३९॥

क्षमा छन्द।

नगन नगन कर्नों जगन्नु गोगो। विरति वरण आठै सरै कहौ हो॥ त्रिदश वरण नीके करो जमा जू। भुजगनृपति याको कहैं क्षमा जू॥ ४०॥

यथा।

निज वश वरनारी सतै जु पालै। भुवि तरुण धनी ह्वै भजै गोपालै॥ तव धनि धनि जीमें कह्यो परैजू। जब समरथ ह्वैकै क्षमा करै जू॥ ४१॥

मंजुभाषिणी।

सगनो जगन्नु सगनो जगन्नु है। गसमैंति तीन दशई

वरन्नु है ॥ षट सत्व बीच जति रीति राखिनी । मृदु छन्द होत है मंजुभाषिणी ॥ ४२ ॥

यथा ।

वह रैनि राजवदनी निहारि हौं । तब दासजन्म सुफली विचारि हौं ॥ अँखियाँ विशाल छबि कंजनाखिनी । बतियाँ रसाल मृदु मंजुभाषिनी ॥ ४३ ॥

मंदभाषिणी ।

ध्वजा ध्वजा नन्द सगनो लगे लगे । त्रयोदशै वरन्न धरिये पगे पगे ॥ छ सातके बीच विराम राखिनी । फणी कह्यो छन्द सुमंदभाषिनी ॥ ४४ ॥

यथा ।

सुनो करै कान्ह वर बीनवादको । कियो करै बासुरिहुके निनादको ॥ विना सुने बैन तुअ कन्दनाखिनी । भली लगै कोकिलउ मन्दभाषिनी ॥ ४५ ॥

प्रभावती ।

तक्कारगो द्विजवर नन्दरागिनो । तीनै दशै चरणानि अख्यरा भनो ॥ चारै छहै तिय विशराम भावती । याको कह्यो अहिपति है प्रभावती ॥ ४६ ॥

यथा ।

कै गोरसी वसन अरु देह सर्वको । कीवो करै दिन दिन ग्वारि गर्वको ॥ जोपै न तो तजि उन चित्त भावती । केती लखी शशिवदनी प्रभावती ॥ ४७ ॥

वसंततिलक।

कर्नौ जगन्नु सगनो सगनो पगंनो। सोहै वसंततिलका दश चारि बंनो॥ आठै छहै वरणमैं जति चारु राख्यो। भाष्यो भुजंगपतिको यह दास भाख्यो॥ ४८॥

यथा।

कारी पलास तरु डार सबै भई हैं। लाली तहां कछुक किंशुककी ठई हैं॥ कैला जग्यो मदनुपावकको विचारो। आयो वसंततिलकानन तो निहारो॥ ४९॥

अपराजिता छन्द।

नगन नगन नन्द नन्द धुजा धुजा। विरति सजति चारु चारु दुजा दुजा॥ चतुर्दशहि वर्णसों पगभ्राजिता। भुजंगभणित छन्द है अपराजिता॥ ५०॥

यथा।

विनय सुनहि चण्डमुण्डविनाशिनी। जनदुःखहरिकोटिचंद्प्रकाशिनी॥ शरण शरण है सदा सुखसाजिता। द्रवहिं द्रवहिं दासको अपराजिता॥ ५१॥

मालिनी छन्द।

नगन नगन कर्नौ योग्य गंनो यगंनो। विरति रचिय आठै और सातैं वरंनो॥ सुगन गुननि लैकै हारही डालिनी है। सरस सुरस बेली पालिनी मालिनी है॥ ५२॥

यथा।

रहति उर प्रभाते स्वर्णकी कांति फैली। विहँसत निज

आभा फेरि पावै चमेली ॥ सहजहि गुहि माला बालके कंठ मेली । अद्भुत छबि छाकी मालिनीस्यौ सहेली॥५३॥

चन्द्रलेखा छन्द ।

चारचो हारा धुजो कर्नों रग्गनो रग्गना है । गो संयुक्तो दशौ पाचै अख्यरा पग्गनो है॥ चारै चारै मिले सात तीनि विश्राम देखो । भोगी भाषै कहै दशो छन्द है चन्द्रलेखो ॥ ५४ ॥

यथा ।

राधा भूले न जानो यों है लवन्या न मेरी । जेहा तेहा तिहारीसी तौ प्रभा है घनेरी ॥ भौंहैं ऐसी कमाने हैं नैनसो कंज देखो । नासा ऐसो सुआतुण्डे आस्यसो चन्द्रलेखो ॥५५॥

प्रभद्रक छन्द ।

दुजवर गैल गैल पिय नन्द नन्द हैं । गुरयुत आठ सात विश्राम बन्द हैं ॥ पन्द्रह बरंन पाय करते अनंद है । कहत प्रभद्रकाश्य अहिराज छंद है ॥ ५६ ॥

यथा ।

रिस करिलै सहाय करि दाप दांकई । तबहुं न कालदण्ड प्रतिवार वांकई ॥ जिमिहिं सुभाय भाइ प्रिय रामभद्रको । दुख हरता दयाल करता प्रभद्रको ॥ ५७ ॥

चित्रा छन्द ।

जोमैं दीजे आठो हारा गोयकरो यकारो । औरै ग्गौ है

विश्रामो छन्द चित्रा विचारो ॥ आठो दीहा माहीं जीहा आशुही दौरि जावै। भोगी भाषै त्योंही याके पाठकी रीति पावै ॥ ५८ ॥

यथा ।

फूले फूले फूले वारी सेजमें जो विहारै । सीते धूपे डाभे काटे मेसु क्यों पाउं धारै॥शोचै भाषै रोवे झंखौ कौशल्य औ सुमित्रा।कैसे सेहै दुःखै सीता कोमलांगी विचित्रा५९

मदनललिता छन्द ।

चारद्यो हारा नगन सगनो कर्नो नगनु है। अन्ते दीही दश रु रसई वर्नो पगनु है॥ चारैमें अरु छह रु छहमें विश्राम लहिये । भोगी भाषै मदनललिता यो छन्द कहिये ॥ ६० ॥

यथा ।

होने लागी गतिललित औ बातैं ललित हैं । हावो भावो ललित मिसरी मानो कलित हैं॥ कानो लागी ललित अतिही दोऊ दृग री । दीन्हो आली मदनललिता तो अंग सिगरी ॥ ६१ ॥

प्रवरणललिता छन्द ।

यगन्नो मोआनो नगन सगनो गोय गन्नो । दशै छाही जाके चरण प्रतिमें होइ वन्नो ॥ छहै छाओ चारो वरणमहिया है विरामी । फणिन्दै भाष्यो है प्रवरणललिता छन्द नामी ॥ ६२ ॥

यथा ।

तिहारे जो वासी मिलनहित है चित्त साधा। कह्यो मेरो मानो चलो उतही बेगि राधा ॥ जहां गाढी कुंजै तरणि-तनयातीर राजैं । गई ह्यांहो देख्यो प्रवरललिता न्हान काजैं ॥ ६३ ॥

गरुडरुत छन्द ।

दुजवर रागनो नगन रागनो रागनो । गरुडरुते भनो वरण सोरहे पागनो ॥ विरति विचारिकै हृदय सात नव ठानये । भुजगमहीपको हुक्म दास जो मानिये ॥ ६४ ॥

यथा ।

वृक तकि छाग ज्यों भजत वृद्ध औ बालको । मृगपति देखि ज्यों भजत झुण्ड शुण्डालको॥ हरहरके कहे भजत पापको व्यूह ज्यों । गरुडरुतै सुने भजत व्यालको जूह ज्यों ॥ ६५ ॥

पृथ्वी छन्द ।

जगन्नु सगना ध्वजा नगन रागना दोइ जू । विराम वसु वर्णमें बहुरि नौहिमें होइ जू ॥ चरणप्रति दास जू वरण सत्रहैं ठीक हैं । अहीश खगनाथसो प्रगटि छन्द पृथ्वी कहैं ॥ ६६ ॥

यथा ।

समर्थ जन कैसेहू करत मन्द जो काज है । विशेषि त्यहि पालते गहंत छोड़ते लाज है ॥ लिये अजहूं शंभुजू

रहत कालकूटैं गरे । अजौं उरगनाथजू रहत शीश पृथ्वी धरे ॥ ६७ ॥

मालाधर छन्द ।

नगन सगना ध्वजा नगन रग्गना अत्तरो । भुजंगपति भाषियो प्रगट छन्द मालाधरो ॥ विरति वसुनो कहै सुकविराजके गोत जू । चरण गनि लीजिये वरण सत्रहै होत जू ॥ ६८ ॥

यथा ।

युवति गिरिराज लषनको गई दूल है । विकल डारिकै भजी निरखि शंभुको शूल है ॥ उरग तन भूषणो वदन आकपनैं भरे । वसन गजपालको मनुजमुण्डमाला धरे ॥ ६९ ॥

शिखरिणी छन्द ।

यगन्नो मोआनो नगन्न सगनो नन्द सगनो । कहै भोगी राजा वरण दश औ सत्त यगनो ॥ छ विश्रामो पाये बहुरि छह औ पंच कारिणी । गनो चारिउ पायें तब कहहु जू है शिखरिणी ॥ ७० ॥

यथा ।

मृगेंद्रै जीत्यो है गतिहि अरु नैनानि हरिणी । सुवेणीही व्यालै रुचिर गतिही मत्तकरिणी ॥ मिलौ माधवजूसों सुचित सजनी ह्वै निडरणी । हरायेई तेरे वसत सिगरे या शिखरिणी ॥ ७१ ॥

मंदाक्रांता छंद ।

चारचो हारा नगन सगनो रग्गना रग्गनंगा । मंदाक्रांता भुजगभनिता सत्रहै वर्ण संगा ॥ कीजै चौथे विरति छठये फेरिकै सातयोंमें। अकनीं हैं सतकविन्हसो दासजू वातयोंमें ॥ ७२ ॥

यथा ।

को माधोनीनलधरणि को कहा कामनारी । केती रंभा विमल छबि है का तिलोत्ता बिचारी ॥ राधाजूके सरिस कहिये क्यों नरी जोषिताको । मन्दाक्रांता करेउ जिन है उरवसी मैनकाको ॥ ७३ ॥

हरिणी छन्द ।

नगन सगनो कर्नों तक्कार भागनुरा धरो । विरति वसुमें नोनें सँभारिकै करवो करो ॥ भरण दश औ सात है पाय में चित्त दै सुनो । फणिराज भाष्यो या छन्दको हरिणी गुनो ॥ ७४ ॥

यथा ।

लजित करता जेहै अंभोज खंजन मीनके । बसत निज जेहीमें गोपाललाल प्रवीनके ॥ फिरत वनमें वै तो पाले परे पशुहीनके । त्रियदृगनसे कैसे नैना कहो हरिणी-नके ॥ ७५ ॥

द्रोहारिनी छन्द ।

चारचो हारा नगर सगना तक्कार कर्ना लगे । भोगीराजा भणित दश औ है सात वर्ना पगे ॥ विश्रामोंके दिशि

मुनिन्हको आनन्द वो हारिणी। दासो भाषै सुनहु सुक-
वियो है छन्द द्रोहारिणी ॥ ७६ ॥

यथा।

मेघादेवी सुचित करनी आनन्दे विस्तारिणी। प्राय-
श्चित्तो बहु जनमको दंडार्धमें टारिणी॥ दोषै खंडि दुरित
हरणी संतापसंहारिणी। राधा माधो चरित चरचा
संद्रोहद्रोहारिणी ॥ ७७ ॥

भाराक्रांता छन्द।

चारचो हारा नगन सगनो जगन्नु जगन्नु गो। भोगी
भाषै विरति दश औ ति चारि पगन्नु जो॥ चारचो पाये
गनि गनि धरियै बरणसु सत्र है। भाराक्रांता कहत
जगमें जु जत्रसु तत्र है ॥ ७८ ॥

यथा।

नीकी लागै सरस कविता अलंकृत सूनियों। क्रीडामें
ज्यो सुखद वनिता सुवस्त्र विहूनियों॥ नहीं भावै अरस
कबहूं सुधीनि एको घरी। भाराक्रांता अभरनानि ज्यों
विभूषित पूतरी ॥ ७९ ॥

कुसुमितलतावल्लिता छन्द।

कै पांचो हारा मगन सगनो रग्गना गोय दीजै। विश्रामो
पांचै बहुरि छहमें सातमें फेरि कीजै॥पायँ पायँमें समुझि
धरिये वर्ण अट्ठार है जू। भोगिन्द्रै भाष्यो कुसुमितलता
बल्लिता छन्द है जू॥ ८० ॥

यथा ।

बंधूपोंबिंबो कमल तिल जू पाटला औ चँबेली । चंपा कश्मीरो घरिहि बिच ह्यां फूलि हैं एक बेली ॥ दीजे आयकौ सुख दृगनिको कुंजके हो बिहारी । बैठो ह्यां देखो कुसुमितलता बल्लिता फूलवारी ॥ ८१ ॥

नन्दन छन्द ।

दुजबर रग्गनो नगन रग्गनो भुजा रागनो । जति मुनिमें भनो छहहुमें ठनो रूपा चैतनो॥अहिपति यों कहै चरणपा लहै सुअट्ठार है । सब दुखकन्दने सुकबिनन्दने रच्यो ज्यों चहै ॥ ८२ ॥

यथा ।

मनु सुनि मों कह्यो चहत जो दर्यो बिथाके गनै । तजि सब आसरै जगतको करै एही तू धनै ॥ भवभ्रमको हनै भगतिसो सनै तनै औ मनै । यशुमतिनन्दने गरुडस्यन्दने करहि बंदने ॥ ८३ ॥

नाराच छन्द ।

नगन नगन रग्गनो आगेहू तिनि दै रग्गनो । बिरति लवहिमें करो वर्ण अट्ठारहै पग्गनो ॥ भाणित भुजंगराजको दासभाषै सुतो सांच है । मदनबिशुखु पांच है षष्टमों छन्द नाराच है ॥ ८४ ॥

यथा ।

परम सुभट हो गन्यो भावती तोहिसो हारियो । निपट बिवशहू गयो हाल बन्दी दयो डारियो ॥ कबहुं डरत

नाहिं जे ते गसों तोपसों कोट सों। करत बिकल ताहि तू नैन नाराचकी चोटसों॥ ८५॥

चित्रलेखा छन्द।

चारचो हार नगन नगन गोयगन्नाय धारो। विश्रामो है चतुर बरण औ सात सातैं बिचारो॥ पायमाहीं गनि गनि धरिये वर्ण अट्ठारहै जू। जीमें आनौ भुजगनृपति यों चित्रलेखा कहै जू॥ ८६॥

यथा।

इच्छाचारी सघन सदन कीयो बनाढ्या अरोगा। भर्त्ता-हीना परमछबिवती धर्तु नारी सँयोगा॥ भोगी दाता तरुणजननके पासमें बाल देखो। ता नारीसो सकुल धरमको राखिवो चित्रलेखो॥ ८७॥

सार्द्धललिता छन्द।

मोआनो सगनो जगन्नु सगनो तक्कार सगनो। विश्रामो गनि बारहै वरणको फेरि छगनो॥ है अट्ठारहै बरण दास लखिये चौंपाय बलिता। याको नाम धरचो भुजगपतिही है सार्द्धललिता॥ ८८॥

यथा।

सालस्या नैना उठी पलंगते पांलागिराबसों। हीमेतेन चली चली सदनको ऐंडाइ छबिसों॥ सोहेते सिगरे सुभांति बिगरे शृङ्गारबलिता। वक्त्रांभोज प्रफुल्ल सार्द्धललिता बेनी विगलिता॥ ८९॥

सुधा छन्द ।

लगो चारो हारा नगन सगनो तक्कार सगनो । छ विश्रा-
मै ठानो छ पुनि गनिकै तो फेरि छगनो ॥ दशै आठै बनो
सुकवि जनको दातार सिद्धिको । सुधाबिन्दो छन्दै भुज-
ग वर्णौ है याहि विधिको ॥ ९० ॥

यथा ।

चलैं धीरे धीरे गति हरति है माते द्विरदकी । उनीदे नै-
नासों हरति अरुणता कोकनदकी ॥ किनारी मुक्तासो
छबि वदनकी या भांति छलकै । सुधाबुन्दै मानो उफिनि
शशिके चौफेरि झलकै ॥ ९१ ॥

शार्दूलविक्रीडिता छन्द ।

मोआनी सगनो जगन्नु सगनो कर्नो यगन्नो धुनो । हेरो
बारह सातमें चहत हौ विश्रामको सो धुजो ॥ देखे जासु
रसाल चाल पदकी पक्षी रहै श्रीहिते । बनों है उनईस
ईश सुनिये शार्दूलविक्रीडिते ॥ ९२ ॥

यथा ।

राजै कुंडल लोल कान शशिकी सोहै ललाटी कला ।
आछे अंगनि पीतवास विलसै त्यों आँगुलीमें छला ॥
तीखे अस्त्र अनेक हाथ गिरिजा लीन्हे महाईडिते । आवै
भांति भली बढावति चली शार्दूलविक्रीडिते ॥ ९३ ॥

फुल्लदाम छन्द ।

है पांचो हारा नगन नगन गोरग्गन्नगोय जामे । पायेमें
बनों दश अरुणवशो जानिये फुल्लदामे ॥ विश्रामो पाँचो

पुनि मुनि महिआ सातमें फेरि दीजै। फैलायो याको भुज-
गनृपतिही दासजू जानि लीजै ॥ ९४ ॥

यथा ।

ब्रह्माशंभुस्यो सुरमुनि सिगरे ध्यावते जासु नामैं । जाके
जोरेको सुनिय न कतहूं बीर दूजो धरामैं॥ ताहीको गो-
पी विवश करति है नपनआरक्ततामैं। टेढी भौंहैं विहकर
गहिकै मारती फुल्लदामैं ॥ ९५ ॥

मेघविस्फूर्जित छन्द ।

यगन्नो मोआनो नसन गगनो रग्गनो रग्गनोगो । जहां
पाये पाये वरण सिगरो वोनईसै गनोहो ॥ छ विश्रामो
लैकै बहुरि छह औ सातसों पूजितो है । याही छन्दो भा-
ष्यो भुजगनृपतिको मेघविस्फूर्जितो है ॥ ९६ ॥

यथा ।

थवयो है बासंती पौन वहि औ कोकिला कूकिहारी । नि-
शानाथो हारच्यो हनन हितुके चन्द्रिका तीक्ष्ण भारी ॥
न आवैगो प्यारो करति सखि तू वादि सन्देह वौरी । स-
हैगो नीकोही कठिन हियरा मेघविस्फूर्जितो री ॥ ९७॥

छाया छन्द ।

यगन्ना मोआनो नगन सगनो कनौं लगै गोलगै । विरामै
दै छामै बहुरि छह, औ सातैं सुनीको लगै ॥ गनो यामें
बर्ना दश अरु नवई पाये पाये वन्दु है । फणीराजा बाणी
चितु धरहि तो छाया यही छन्द है ॥ ९८ ॥

यथा ।

लियो हाथे बन्शी बसन पहिरचो गोपालको आपुही । न जाने क्यों पायो बरण वहईकै शीश ज्यों जापुही ॥ हँसै बोलै मानो करति अबहीं क्रीडाहि विस्तारसी । यकांता-में कांता लखति निज यों छाया लिये आरसी ॥ ९९ ॥

सुरस छन्द ।

चारचो हारा यगन्ना नगन नगन नन्द सगनो । सातो विश्राम कैं कै पुनि करि मुनि औ पंच पगनो ॥ ठानी ज-यदास आछो दश नव बरणो एक चरणो । भाषै श्रीनाग-राजा इहि विधि सुरसा छंद तरणो ॥ १०० ॥

यथा ।

यानै दासै अकेलै पवनतनयके नाम फलको । नींदै जाके भरोसे कलिकमलको दुक्ख दलको ॥ फालै जानै पयोदै किहि न कि जिहिको गाइ सुरसा । जानै बुध्यो बडाई बिनय लघुतई एक सुरसा ॥ १०१ ॥

सुधा छन्द ।

यगन्ना मोआनो नगन नगन गोगीयगानो । छ विश्रामै ठानो मुनि पुनि करिकै सातई फेरि तानो ॥ गनो पाये पाये गुर लघु मिलिकै वर्ण हैं दास बीसै । सुधा याको नामै मधुर समुझिकै आपु राख्यो अहीसै ॥ १०२ ॥

यथा ।

वसै शंभुमाथे विमल शशिकलापे लिहयांते कढी है ।

नेरेहू प्राणीको अमर करति है सांचु याते बढ़ी है॥
कहै याको पानी गुन गनत न को दास जान्यो न जाको।
श्रवै सीरो सोतो सुरसरि महिआँ स्वच्छ साचो सु-
धाको॥ १०३॥

सर्ववदना छन्द।

नौं कनौं यग्गनो द्विजवर सगनो। ठानो बिश्राम सा-
तो पुनि मुनि रस है विश्राम पगनो॥ बर्नो बीसै सँवारो
चरण चरणमें आनंद सदनै। भोगीराजा बखान्यो सकल
वदनसी है सर्व वदनै॥ १०४॥

यथा।

पूजा कीजै यशोदा हरि हलधरको मोसो सुनति हौ।
बाँधो मारो वृथाही इनको अपनो जायो गुनति हौ॥ पा-
लै मारै उपजावै सकल जगत् यहै है दैत्यकदनै। थाके
जाके बखानै करत सरस्वतीस्यो सर्व वदनै॥ १०५॥

स्रग्धरा छन्द।

चारचो हारा यगन्ना दुवर सगनो रग्गना द्वै विराजै। दी-
जै ता अंत हारो मुनि मुनि मुनिमें तीनि विश्राम साजै॥
दीन्हे बर्नो इक्कीस चरणमें भांतिको वृन्द भाजौ। भाष्यो
भोगीशजूको सकल छबि भयो स्त्रग्धरा छंद छाजै १०६

यथा।

मूसो सिंहो मयूरो डमरु वृषभ औ व्याल हैं संगमाहीं।
नाके है एक एकै असन करनको पावते घात नाहीं॥

जागे है भै विचारयो कुशल रहति है शंभुजूके घरैमें।
माथे पीयूष धारी शुभ शिरनिको स्त्रग्धरे हैं गरेमें॥१०७

सरसी छन्द।

नगन जगन्नु नन्द सगनो सगनो सगनो लगे लगे। बिर-
ति विवेक एक दशमें करिये पगे पगे ॥ बरण एकीस
दास दरसी दरसी दरसी रसी रसी। तिरति सुबुद्धि
छन्द सरसी सरसी सरसी रसी रसी॥ १०८॥

यथा।

भँवर सुनाभि कोक कुच है त्रिवली विमली तरंग है।
द्विभुज मृणाल जानि करको कमलै कहिये सुरंग है॥ल-
हत कपोल कंबु सरिको अँखियाँ झखियाँ अनूप है। चि-
कुर सेवार रूप जलजू वनिता सरसी स्वरूप है॥१०९॥

भद्रक छन्द।

गोसगनो जगन्नु सगनो जगन्नु सगनो जगन्नु सगनो।
चारिनि दै विराम छगनो बहोरि छगनो बहोरि छगनो॥
बाइसही विचारि मननें चहूं चरणमें धरयो बरणमें।
भद्रक है रसाक रणमें गुना गरनमें सुन्यो करणमें॥११०

यथा।

कीजियेजु गोपाल अरचा गोपाल चरचा सदाहि सुनिये।
मेटनको महाकलुषको दरिद्र दुखको न और गुनिये॥
जाहिर है सुरासुरनि लहू गुरनिमें चराचरनिमें। भद्रक
है यही अरनमें यही टरनमें यही परणमें॥ १११॥

आद्रितनया छन्द ।

पिय सगनो जगन्नु सगनो जगन्नु सगनो जगन्नु सगनो । जति सर दै बहोरि छगनो बहोरि छगनो बहोरि छगनो ॥ गनि गनिकै त्रिवीस मनमें चहू चरणमें धर्यो वरणमें । गुनि गुनिकै जु आद्रितनया सुअक्षरनमें कह्यो शरणमें ॥ ११२ ॥

यथा ।

घट घटमें तुही बसति है तुही बसति है स्वरूपमतिके । तुअ महिमा अरी रहति है सदा हृदयमें त्रिलोकपतिके॥ निज जनको विना भजनहू कलेश हननी विथा निहनिनी । जय जय श्रीहिमाद्रितनया महेशघरनी गणेशजननी ॥ ११३ ॥

भुजंगविजृम्भित छन्द ।

चारो हारा चारो हारा दुजधर दुज सगनो जगन्नु जगन्नु हो॥आठैमै ले तो विश्रामे पनि विरमत एकदशमें फरो पनि सात हो ॥ पारामें छवीसै वर्णा वरणित भुजगनृपतिको सुखाकर है कितो । याके नामे जानो चाहो चितु दै सुनो वचन तो भुजंगविजृम्भितो ॥११४॥

यथा ।

साधूमें साध त्वैपै रावह्व बिधि विनय करत हूं निरादरकी नेहूं । जैसे धेनु दुग्धै देती कटु तिन अमित चरतहूं गुडादिक दीने हूं ॥ मंदेसो मन्दी ये होती जब

तब जगत बिदित है उपाय करो कितो।जैसे मिस्री छीरै प्याये बिसमय स्वसन वहत है भुजंग विजृम्भितो ११५

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे वर्णवृत्तश्लोकरीतिवर्णनं नाम द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

अथ अर्द्धसमवृत्ति दोहा।

पहिलो तीजो समचरण दूजो चौथ समान।
करो अर्द्धसम छन्दमें इहि विधि वृत्ति सुजान ॥ १

पुहपतिअग्र छन्द।

दुजवर रागनो यगन्नो। दुजवर नन्द जगन्नु गोयगन्नो॥ पुहपति अग्रछन्द बर्नो। विषम दशै त्रिदशै समेति वर्नौ ॥ २ ॥

यथा।

फिरि फिरि भूमिकै कहै नवेली। विधि यह कौन प्रकार की चमेली ॥ रंग धरति कनैल पाखुरीके। छुवति जिपुष्प तिअग्ग आँगुरीके ॥ ३ ॥

उपचित्रक छन्द।

सगना सगना सगना लगो। भागनु भागनु भागनु कर्नौ ॥ अखरा चहु पायनि ग्यारहै। छन्द यही उपचित्रक वर्नौ ॥ ४ ॥

यथा।

म उठै कर जासु सलाम सो बात कहै मिल ऊतर नाहीं।
न करो दुख मानव जानिकै मित्रसु है उपचित्रक माहीं ५

वेगावती छन्द ।

सगनो सगनो लयगन्नो । भागनु भागनु भागनु कनौं ॥
विषमें दश वर्ण प्रपन्नो । वेगवती सम ग्यारह वन्नो ॥ ६ ॥

यथा ।

मिटिगो अधरा रंगु क्यों है। बाढ़ि गई बकवाद घरी है ॥
सिगरो तन स्वेद सनो है। तो डर आवत वेगवती है॥७॥

हरिणलुत छन्द ।

विषमें अषरा इकहीन है । सुनि सुन्दरि पायनि लीन है ॥
भनि पन्नगराज प्रवीन है । हरिणलुत्त सुछंद नवीन है ८॥

यथा ।

वनकी बनिता लखि पाइहै । इकहीकी इकईल लगाइ है ॥ मर रोकनिकी सजि वानिको । हरिनलुत्त करो कुलकानिको ॥ ९ ॥

अपरचक्र छन्द ।

दुवर सगना जगन्नुगो । दुजवर गो सगना जगन्नुगो॥ शिव रवि अखरानि राखियो । सुअपर चक्र भुजंग भाषियो ॥ १० ॥

यथा ।

ब्रजपति इक चक्रको धरचो । त्रिभुवनको निज हाथमें करचो ॥ तुअ बश शुभ यों विशेषिके । तिय बिय चक्र-नितम्ब देखिकै ॥ ११ ॥

सुन्दरछन्द ।

सगना सगना जनन्नुगो । सगना भागनु रग्गना लगो॥

विषमे अखरा दशै धरो । समपद ग्यारह छंद सुंदरो ॥ १२ ॥

यथा ।

पढिकै दृढ मोहनमंत्रको । सजनी सोधि शिंगारतंत्रको ॥
रचना विधना अनंगकी । सुखमा सुन्दर श्याम अंगकी ॥ १३ ॥

द्रुतमध्यक छन्द ।

भागनु तीनि गुरू बिय दीजै । पुनि दुज भागनु गोलय कीजै ॥ ग्यारह बारह आखर पाये । कहि द्रुतमध्यक छन्द सुभाये ॥ १४ ॥

यथा ।

कौतुक आजु कियो वनमाली । जल बिच कूदि परेउ सुनि आली ॥ नाथि फणिन्दहि तोष फनिन्दी । प्रगट भयो द्रुत मध्य कलिन्दी ॥ १५ ॥

दुमिला मुखमदिरामुख दोहा ।

सम मदिरा दुमिला विषम दुमिला दुख पहिंचानि ।
उलटि सुमदिरा मुख कहै इहि विधि औरो जानि ॥ १६ ॥
होहि विषम चारों चरण विषम वृत्ति है सोइ ।
वेदनि बीच प्रमाण नहिं भाषा वरणै कोइ ॥ १७ ॥

इति श्रीदासकृते छन्दोर्णवे अर्धसमविषमछंदवर्णनं नाम त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

अथ मुक्तकछन्दवर्णन दोहा।

अक्षरकी गणिती यदा कहुं कहुं गुरु लघु नेम।
वरणचन्दमें ताहि कबि मुक्तक कहै सप्रेम॥ १॥

श्लोक तथा अनुष्टुप् छंद।

चारि आगे धुजा एकै दूसरे द्वै धुजा थपो।
आठ आठ चहुं पाये श्लोक नाम अनुष्टपो॥ २॥

यथा।

जन दीन दुखी करता हरता भयभीरको।
लोक तीनिहुंमें फैल्यौ श्लोक श्रीरघुवीरको॥ ३॥

गंधा छन्द दोहा।

प्रथम चरण सत्रह वरण दुतिय अठारह आनु।
योहीं तीजो चौथऊ गंधा छंद बखानु॥ ४॥

यथा।

सुन्दरि तू क्यों पहिरति नग भूषण आसावली।
तन द्युति तेरी सहजही मसाल प्रभावली॥ ५॥
चौवा चन्दन चन्द्रकै चाहै कहा लडावली।
तेरे बात कहतको सकलों फैलै सुगंधावली॥ ६॥

घनाक्षरी छन्द दोहा।

बसु बसु बसु मनि जाति बरण घनाक्षरी यकतीस।
चौ वसु रूप घनक्षरी बत्तिस गन्यो फणीस॥ ७॥

यथा।

जबहींते दास मेरी नजरि परी है वह तबहींते देखिवेकी भूख सरसाति है। होन लग्यो बाहरे कलेशको कलाप

उर अंतरकी ताप छिनहीं छिन नसाति है॥चलदलपातसे उहरपर राजी रोमराजीकी बनक मेरे मनमें बसति है। शृंगारमें स्याहीसों लिखी है नीकी भांति काहू मनोयंत्र पांति घनअक्षरी लसाति है ॥ ८॥

रूपघनाक्षरी छन्द ।

दरशि परशि वह तापको हरत वह प्रमदा प्रवीण निको मोहित करत प्रान । वह बरसावै हिय प्रेमरसबूंदनिको वह मनु बेझो बेधे चूकत न जग जान॥ चारु चारु विधि-को विलोकि गुन चारिहूमें तब दास प्यारमैं विचारे उचारेउ उपमान। वदन सुधाधर अधरबिंब मेरी आली स्वच्छ तनरूप घनअक्षरी प्रबल बान ॥ ९ ॥

बरणझुल्लना छन्द दोहा ।

कहूं सगन कहुं झगन है चौवीस बरण प्रमान।
गुरु द्वै राखि तुकंतमें बरण झुल्लना ठान ॥ १० ॥

यथा ।

अरी पानि पीवै नहीं पानि छीवै नहीं बास अरु बसन राखै न नेरो। भरेउ प्राणके ऐनमें नैनमें बनमें है न गुण-रूप अरु नाम तेरो ॥ बिरहबश ऐसेही है वहीकै मही राखि है कै नहीं प्राण मेरो। नित दासजु याहि सन्देहके झुल्लना झुलती चित्त गोपालकेरो ॥ ११ ॥

इति श्रीदासकृते छंदोर्णवे मुक्तकछंदवर्णनं नाम चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

अथ दण्डकभेद दोहा ।

द्वै न सात यग्गन रचित दण्डक चरणनि देखि ।
चरण चरण नव सगन मय कुसुमस्तबक विशेषि ॥ १ ॥

प्रचितदण्डक ।

जयति जै सुखदानी अविद्यानिदानी सुविद्यानिधानी रटै वेदवानी । शरण तुव शरण बानी महेन्द्री मृडानी दयाशीलसानी तिहूं लोकरानी ॥ धनि जगत त्यहिं बखानी वहै भाग्यमानी वही संत जानी वही वीरज्ञानी । प्रचित कहत जु प्रानी नमस्ते भवानी नमस्ते भवानी नमस्ते भवानी ॥ २ ॥

कुसुमस्तबकदण्डक ।

सखि शोभित श्रीनँदलाल भये निकसे बनते बनितागनसंग जबै। हरि साथ उरोजवतीनिके हाथनि याहि प्रभाहि धरे गुलदस्त फबै ॥ हरिजूके हराइबेको बहु तीर तलास करो अनुमानिकै दास अबै । चित पायते ले ले मिली है मनो कुसुमस्तबक कै कुसमयखकी सैन सबै॥३

अनंगशेखरदण्डक दोहा ।

चारि दशै के पंद्रहै कै सोरह धुज पाइ ।
लखि अनंग शेखर कहो दण्डक भोगी राइ ॥ ४ ॥

यथा ।

विलोकि राजभवनके बनाउको विधातऊ भ्रमै न दास चित्त धीर कैसे हू धरे रहैं । तहां घरी घरी गोपाल वृन्द

वृन्द सुंदरी न जाइ जाइ संग लै तमालसे अरे रहैं ॥ परै विचित्र छाहै वै जहां छजे जराउसे समूह आरसीनिके देवालमें जरे रहैं । प्रभा निहारि कान्हकी छके सके न छांडि संगसे नस्यो चहूं दिशा अनंगसे खरे रहैं ॥ ५ ॥

अशोकपुष्पमंजरीछन्द दोहा ।

यामें पंद्रह वर्ण हैं अंत गुरूसो काम ।
ता दण्डकहि अशोकयुत पुष्पमंजरी नाम॥ ६ ॥

यथा ।

ऊभि ऊभि श्वास लेत ब्योस जो टरउ कहूं टरै न कालरातिसी कराल आई सर्वरी । दास ईश वोस तप्ततेलसी लगै शरीर सर्पश्वाससी लगै बयारी यों घरी घरी॥ रावरे वियोग राम सुक्खदानि वस्तु सर्व दुःखदानि सीयकोपकुं कुही दई करी । भानुसो हिमांसुसो कृशानुसो सरोजपुंज शोक भूरिको भरै अशोकपुष्पमंजरी॥७॥

त्रिभङ्गदण्डक दोहा ।

पंच विप्र भागनु दुगु रस दो नन्द गोठाउं ।
चरण चरण चौतिस बरण बरण त्रिभंगी गाउं ॥ ८ ॥

यथा ।

सजल जलद जनु लसत विमल तनु श्रमकन त्यों झलको हैं उमा गोहै बुंद मनोहैं । भुवयुग मटकनि फिरि फिरि लटकनि अनमिख नयननि जोहै हर्षों है ह्वै मन मोहैं॥पगि पगि पुनि पुनि खिन खिन सुनि सुनि मृदु मृदु

ताल मृदंगी मुरचंगी झांझ उपंगी। बरहिबरह धरि अमित कलनि करि नचत अहीरन संगी बहुरंगी लाल त्रिभंगी ॥ ९ ॥

मत्तमातङ्गलीलाकरदण्डक दोहा।

पाय करो नौ रगनते चौदहलों चित चाहि।
नाम मत्तमातंगको लीलाकर कहि ताहि ॥१०॥

यथा।

पाइ विद्यानिको वृन्दजू भारती ल्याइ सानन्दजू मानुषी-कृत्तिसो वृन्दजू छंद छीला करै तौ कहा। ह्वै महीपा-लको मोर आखेटमें साँझ ह्वै भोरलो लीन करसीनकी दौर पक्षी लजीला करै तौ कहा॥ शुभ्र शोभा सबै अंगमें सुंदरी सर्वदा संगमें लीन ह्वै राग और रंगमें नृत्यकीला करै तौ कहा। जो नहीं ठानिकै तत्तु भौ रामलीलाहिसो रत्त तो बाहरेसै करै मत्तमातंगलीला करै तौ कहा॥११॥

अथ दण्डकभेद कुण्डलिया।

दोइ नगन करि सातई रगन देहु प्रति पाइ। चण्डवृष्टि प्रयात यों दण्डक रचो बनाइ॥ दण्डक रचो बनाइ आठ रग्गनको अनों। नौ अनों दश व्याल रुद्र जीमूतहि बनों॥ लीलाकर बारह उद्याम तेरहै कहो इन। दास चतुर्दश शंख सबनि शिर चाहिय दोइन॥ एकै कबित बनाइकै गण गण पर तुक ल्याइ। दास कहै यों आठऊ उदाहरण दरशाइ॥ १२॥

यथा ।

शरण शरणही सदा ताहि कीनो कृपासिंधु गोपाल गोविन्द दामोदरो विष्णुजू माधवो श्यामजू औ स्वभू सुक्खदासनु है दासको । सदय हृदय है हमैं पालि है आपनो जानिकै सोइ विश्वेश विश्वंभरो विष्णुजू राघवो रामजु औ प्रभू दुक्खहाहर्नु है त्रासको॥ सुयश विदित जासु संसारके बीचमें सर्वदा ईश है देव देवेशको धर्म है पालिवो ज्याइवो मारिवो जो गनो है चहू वेदमें । भजन करिय चित्तमें ताहिको नित्यही दानि है सिद्धिको लोकलोकेशको कर्म है घालिवो ज्याइवो तारियो सो भनो क्यो लहो भेदमें ॥ १३ ॥

दोहा ।

छंदनि दोहरो चौहरो करि निजबुद्धि विवेक । मनरोचक तुक आनिकै दण्डक रचो अनेक ॥ रागनके वश कीजिये ताहि प्रबंध बखानि । छंद लिये सो पद्य है गद्य छंद बिन जानि॥ग्यारहते छब्बीस लगि वरण दुपद तुक एक । सो शिर दै बहु छंददल परे प्रबंध विवेक ॥ भेदछंद दण्डकनिको दोऊ पारावार । वरणन पंथ बताइये दीन्हो मति अनुसार॥ सत्रहसै निन्नानवे मधुवदि नवैक बिंदु । दास कियो छंदार्णव सुमिरि साँवरो इंदु ॥ घने दिननको ग्रंथ यह बिगरयो हतो बनाइ । ताहि सुधारयो शुद्ध करि दुर्गादत्त चितलाइ ॥ आदौ जैपुरनगरको अब

काशीमें वास । भाषा संस्कृत दुहुनमें राखहुं अति अभ्यास ॥ गौड द्विजवरजाहिरो दुर्गादत्त सुनाम । प्राचीननके ग्रंथको शोधेहु चारो याम ॥

इति श्रीदासकृते छंदोर्णवे दण्डकभेदवर्णनं नाम पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

इति भिखारिदासकृतः छन्दोर्णवपिंगलग्रंथः समाप्तः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना
कल्याण-मुंबई.



श्रीराधागोपालपंचाङ्गम्-इसमें आगे लिखे हुए विषय हैं. १ त्रैलोक्यमंगलकवचम् । २ श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रम् । ३ श्रीगोपालस्तोत्रम् । ४ श्रीकृष्णस्तोत्रम् ५ विष्णुहृदयम् ६ । श्रीबिःसमंगलस्तोत्रम् । ७ श्रीराधाकवचम् । ८ श्रीराधासहस्रनामस्तोत्रम् । ९ श्रीराधिकास्तवराजः। १० श्रीराधाकवचम् । ११ श्रीराधासहस्रनाम । १२ श्रीराधाकवचप्रश्नः की. १२ आना ।

विनयपत्रिका सटीक.

तुलसीदासकृत इस अपूर्व और अद्भुत ग्रंथ पर महात्माओं ने अनेक टीका किये हैं, जो कोई पुरुष सत उपदेष्टा से सम्यक् श्रवण करे अथवा आप स्वयं एकाग्र चित्त से श्रमपूर्वक अभ्यास कर मनन करे तो अवश्य परम तत्व को प्राप्त हो सक्ता है-परंतु श्रमाधीन वस्तुकी लाभ जो विना परिश्रम के प्राप्त हो जावे और उत्साह पूर्वक मन लगै तो और भी अतीवोत्तम है, इसीसे टीकाकारने पूर्व वर्णित महानुभावों के टीका भूषणों को इस ग्रंथ रूपी मूर्ति के प्रत्येक अवयवों पर भूषित कर दिया अर्थान्तर सरल रीति से भाषा में पदच्छेदपूर्वक प्रतिशब्द टीका किया कि जिस के द्वारा विद्यानुरागी भक्तजन अनायास यथार्थ तत्वज्ञानी होकर निस्संदेह परम पद को प्राप्त हो जावेंगे और पाठशाला के विद्यार्थियों को भी विद्योपार्जन के लिये अत्यंत सुलभ और लाभकारी होगा । ग्लेज की० २॥ रु०. रफ् की० २ रु०।

अभिलाखसागर.

(अपूर्व ग्रन्थ) यह ग्रन्थ भाषामें अभिलाखदास स्वामीजीने बनाया है इसमें तरंग ग्यारह हैं, और प्रत्येक तरंगमें दो चार आठ कई लहरियांभी हैं, गुरुशिष्य संवादसे ब्रह्म किसको कहते हैं यह इसमें व्यवहार रीतिसे प्रतिपादित है । एक शिष्यने बहुत गुरुओंके पास जा ब्रह्मका प्रश्न किया है । और सब गुरुओंने भिन्न २ मतोंसे ब्रह्म बताया है, इन सब मतोंका खंडन कर अंतमें ब्रह्मकी सिद्धि की है । इसमें एकवार थोडा भाग देखनेसे सब ग्रंथ पढनेकी उत्कंठा हो जाती है, और पुनः पुनः पढनेसेभी तृप्ति नहीं होती, यह चमत्कार है, की० २ रु० ।

श्राद्धविधान भाषाटीकासहित.

यह नवीनपुस्तक बहुत उत्तम छपके तैयार है. इसमें ४ प्रकरण हैं. प्रथम प्रकरणमें-वेदकी ऋचा और मनुस्मृतिके प्रमाणानुसार पितृपितामहादिकोंके वास्ते श्राद्ध करनेकी योग्यता तथा विवादीजनोंका मतखंडन इत्यादि विषय हैं. दूसरे प्रकरणमें--श्राद्धमें सूतकादिका निर्णय, श्राद्धमें कुशा और तिलआदि वस्तु यथायोग्य वरतनी तथा श्राद्ध करानेकी विधि अच्छे प्रकारसे कही है. तीसरे प्रकरणमें-मसूर, चना आदि पदार्थोंका त्याग अनेक अयोग्य पुष्पादिकोंका और निंदित ब्राह्मणादिकोंका त्याग तथा योग्य वस्तुओंका ग्रहण ब्राह्मणोंको जिमानेकी विधि कही है. चौथे प्रकरणमें-अमावास्यामाहात्म्य आदि संकीर्ण बातें कही हैं. यह ग्रंथ भाषाटीकासे विभूषित होनेसे ब्राह्मण वैश्यादि सभी साधारण मनुष्योंको उपयोगी है. की० ६ आना.

वाल्मीकीयरामायण.

भूषण आदि टीकात्रय सहित.

महाशयो ! देखो इस अपूर्व भूषणटीकाकी पांडित्यशैली सुगमता, विचारचातुर्य आदि सब अद्भुत गुण कैसे चमकते हैं. देखो 'भूषण यह नामभी कैसा अन्वर्थ रखा गया है जिसके श्रवणमात्रसेही कल्पना होती है कि रामायणरूपी भगवान् रामचंद्रजीकी मूर्तिको टीकारूपी अलंकारोंसे अलंकृत किया है. और ऐसीही टीकाकारने कल्पना कर रचना की है. देखो—कि उक्त भगवान बालकांडरूपी पादको टीकारूपी मणिमंजीर (पायजेब) अयोध्याकांडरूपी जघनको पीतांबर, अरण्यकांडरूपी कटिको रत्नमेखला (कौंदनी), किष्किंधाकांडरूप हृदय और कंठको मुक्ताहार (मोतियोंका कंठा), सुंदरकांडरूपी ललाटको शृंगारतिलक, युद्धकांडरूपी शिरको रत्नकिरीट और उत्तरकांडरूपी ऊपरके भागको मणिमुकुट इस तरह ये गहने अर्पण कर रामायणरूपी भगवानको सजाया है. तो इस व्याख्यामें क्या कम है कुछ नहीं फिर लेनेमें क्या हरज है झट लीजिये और उसका पाठ कर अपना जन्म कृतार्थ कीजिये. यह २५ रुपये कीमतका पुस्तक लेनेवालोंको भगवद्गुणदर्पण भाष्य आदि व्याख्यात्रय समेत (१२००० ग्रंथ) भेंट (किफायत) में मिल जाता है ।

श्रीविष्णुसहस्रनाम.

पाठको ! यह ग्रंथ कितना अमूल्य है कि जिसमें एक२ नामपर श्रुति, स्मृति, पुराण, व्याकरण आदि प्रमाण वचनोंसे बढाकर दो दो सफेतक भगवानके गुण गाये हैं. ऐसे पुस्तकको विद्वान् न देखे तो अन्य कौन देख सक्ता है यह ग्रंथ बहुतही बडा होनेपरभी ५ रुपयेमें देता हूं लीजिये और सुप्रसन्न हूजिये ।

सविनयं सूच्यते.

संस्कृतादि पुस्तकप्रकाशक-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " नाम मुद्रणयन्त्रमें संस्कृत तथा भाषाटीकासहित अनेकानेक ग्रन्थ जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, काव्य, न्याय, व्याकरण, छन्द, नीति, चम्पू, नाटक, स्तोत्र, वैद्यक, स्मृति, कोष, इतिहास, श्रीरामानुजसाम्प्रदायी तथा हिन्दी भाषाके सब एकम ग्रन्थ सर्व काल विक्रयको तयार रहते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलसक्ते खुलापत्राकार तथा किताब सपुष्ट रेशमी विलायती चित्रित जिल्द बँधी है पुस्तकोंकी रचना और शुद्धता इस छापेकी उत्तम है कि देखनेसे चित्त प्रसन्न हो जाय जिनका दूसरा सूचीपत्र है. आध आनेका टिकट भेजनेसे शीघ्र रवाना होता है.

मयूरचित्रक मूल ...	...	...०-३
बृहत्संहिता भाषाटीका ग्लेज	....	.... ४-०
स्मृतिरत्नाकर (धर्मशास्त्र)	....	...२-०
बारहमासतरंग भाषामें...	...	... ०-६
दत्तात्रेयतंत्र भाषाटीका	...	...०-१०